चातुर्वेदसंस्कृतप्रचार-ग्रन्थमाला-००४

भारतीय-वैभव-ज्ञानमाला

वरिष्ठ एवं स्नातक वर्ग

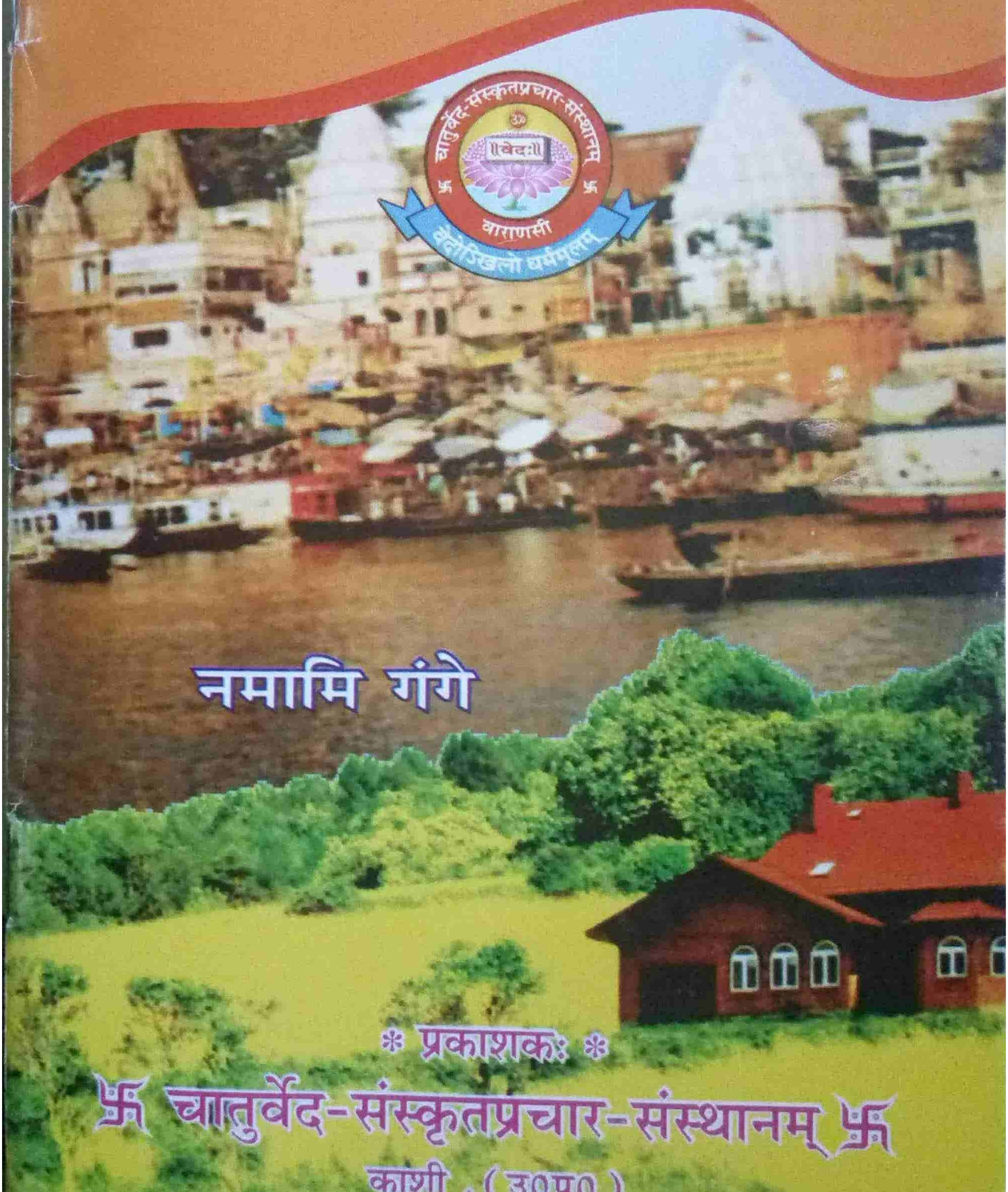

नमामि गंगे

* प्रकाशकः *
卐 चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम् 卐
काशी, (उ०प्र०)

प्रिय छात्रों,

आप को पता ही है कि हमारा देश भारत एक विशाल देश है। विभिन्न मत, पन्थ, सम्प्रदाय एवं धर्म को मानने वाले लोग यहाँ भाई चारे के साथ रहते हैं। विविधता में एकता हमारी पहचान है। इस देश ने सम्पूर्ण मानव को सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ाया है। ज्ञान-विज्ञान के प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद को दिया है। आज ज्ञान-विज्ञान जो प्रगति कर रहा है उस प्रगति का दृष्टिकोण वेद, स्मृति, पुराणादि विशाल संस्कृत साहित्य है। सभी धर्म, विचार इसके बाद ही अस्तित्व में आये।

हमारे धर्मग्रन्थों में जड-चेतन, प्रकृति-पुरुष सभी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जीवन सुख-दुःख दोनों से युक्त है, अतः दुःखों, कष्टों, परेशानियों से मुक्ति के लिए बहुत से उपाय बताये गये हैं। प्रकृति को ईश्वर का अप्रतिम उपहार कहा है। इस उपहार को हम अपना धरोहर बनावें। जीवन के उत्कर्ष- अपकर्ष का सामना कर सुख का मार्ग प्रशस्त करें। इसके लिए जीवन को स्वस्थ बनाना होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। स्वस्थ मस्तिष्क सुसंस्कृत समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करता है। कहा भी गया है- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (धर्म - कार्य को सम्पन्न करने का प्रथम साधन है शरीर। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं0 मदन मोहन मालवीय जी छात्रों को हमेशा कहते थे- सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति, आत्मत्याग के द्वारा अपने समाज में सम्मान के योग्य बनो।

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।
देशभक्त्याऽत्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव।।

भारतीयवैभव-ज्ञानपरीक्षा के द्वारा एक आह्वान

वन, नदियाँ मानव समाज के लिए वरदान होते हैं। अनेक ऋषि-मुनियों ने इन पवित्र नदियों के तट पर, वृक्षों के नीचे बैटकर तप किया, अपने अपने मनोरथों को पूर्ण किया है। हमारे देश भारत में इनका सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक महत्त्व है। देश की अपनी धरा को हरा-भरा तथा स्वच्छ करने कें लिए सरकार के साथ आप और हम मिलकर नदियों को स्वच्छ रखें, वृक्षारोपण करें, आरोपित वृक्षों का संरक्षण करें अपनी धरा को सजाएँ। अपनी मातृभूमि को स्वर्ग से सुन्दर बना कर प्रकृति को उपहार दें।

आइये हम संकल्प लें जन्मदिन पर वृक्ष लगायेंगे पृथ्वी को हरा-भरा बनायेंगे। अपने आस-पास कहीं वृक्ष कटे, गिरे, या सूखे तो वहाँ वृक्षारोपण को प्रेरित करें या स्वयं वहाँ वृक्ष लगायें। वृक्ष लगाने की स्पर्धा करें, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर प्राकृतिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य का उपहार प्राप्त करें।

सधन्यवाद!

आपका अपना
डॉ. चन्द्रकान्तदत्त शुक्ल
लेखक/संपादक/परीक्षा संयोजक
8318867067

प्रकाशकः
चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्
सम्पर्कसङ्केतः
मञ्जूत्रिशक्तिभवनम्
सी.के. 66/22 बेनियाबागः, वाराणसी
csps.kashi@gmail.com
f चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्

वैदिक-राष्ट्रगानम्

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा, राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुः वोढ़ानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिः, योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां, निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमो नः कल्पताम् । यजुर्वेदः 22/22

भारत वर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्व से न्यारा
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।।
      हों ब्राह्मण विद्वान् राष्ट्र में, ब्रह्मतेज व्रत-धारी,
      महारथी हों शूर धनुर्धर, क्षत्रिय लक्ष्य-प्रहारी।
गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की, रहें बहाती धारा।
      सब साधन से रहे समुन्नत..........।।1।।
      भारत में बलवान् वृषभ हों, बोझ उठायें भारी,
      अश्व आशुगामी हों, दुर्गम पथ में विचरणकारी।
जिनकी गति अवलोक लजाकर, हो समीर भी हारा
      सब साधन से रहे समुन्नत...........।।2।।
      महिलाएँ हो सती सुन्दरी, सदगुणवती सयानी,
      रथारूढ भारतवीरों की, करें विजय-अगवानी।
जिनकी गुण-गाथा से गुंजित दिग्-दिगन्त हो सारा
      सब साधन से रहे समुन्नत...........।।3।।
      यज्ञ- निरत भारत के सुत हों, शूर सुकृत-अवतारी,
      युवक कहाँ के सभ्य सुशिक्षित, सौम्य सरल सुविचारी,
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का, भावी सुदृढ़ सहारा।
      सब साधन से रहे समुन्नत...........।।4।।
      समय-समय पर आवश्यकता वश, रस धन बरसाये,
      अनौषथ में लगें प्रचुर फल और स्वयं पक जायें।
योग हमारा, क्षेम हमारा स्वतः सिद्ध हो सारा,
      सब साधन से रहे समुन्नत...........।।5।।

- क.वेदकथाङ्कः (गीताप्रेस)

धन्यास्तु भारतभूमिः

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥ -कुमारसम्भवम् 1/1

भारतवर्ष की उत्तरदिशा में देवतात्मा हिमालय नाम का पर्वतराज है। जो पूरब और पश्चिम के समुद्र के जल का अवगाहन करते हुए पृथ्वी के मानदण्ड स्वरूप स्थित है।

गायन्ति देवाः किल् गीतकानि,
धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूताः,
भवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वात् ॥ -विष्णुपुराणम्

भारतवर्ष की महिमा का गान देवता लोग भी किया करते हैं। क्योंकि यही भूमि स्वर्ग और अपवर्ग का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः देवता लोग भी यहाँ जन्म लेने की इच्छा करते हैं। धन्य है हमारी मातृभूमि भारत।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्ववेद - 12.1.12)

भूमि हमारी जननी (माता) है और मैं उसका पुत्र हूँ।

प्राचीनं भारतम्

भारतस्य उत्तरी सीमा-	हिमालयतः त्रिविष्टपं (तिब्बत) यावत्। अत्रैव 'कैलास मानसरोवरः' अस्ति।
उत्तर-पश्चिमी सीमा-	उपगणस्थानम् (अफगानिस्तान)यावत्। एतत् स्थानं सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य - अशोकादि राज्यकाले भारतस्य अङ्गम् आसीत्। महाभारतकाले अस्य एव नाम गान्धारः आसीत्। 'गान्धारी' अत्र एव अभवत्।
पूर्व-दिशि-	ब्रह्मदेशः (म्याँमार) पर्यन्तम् ।
पाकिस्तानम्-	1972 ईस्वीतः पूर्वं पूर्वी पाकिस्तान-देशः अपि भारतस्य अङ्गम् आसीत् ।
बांग्लादेशः-	पूर्वं भारतस्य अङ्गम् आसीत् ।
दक्षिणे-	हिन्दमहासागरे स्थितः द्वीपः श्रीलंका कदाचित् अस्माकं देशस्य भागः आसीत्।

भारत-गौरव

भारत की राजधानी -नव देहली

भारत का क्षेत्रफल -32,87263 वर्ग किमी. (विश्व में 7वां स्थान)

भारत की जनसंख्या -1.36 अरब (एक सौ छत्तीस करोड़)

भारत में राज्यों की संख्या -28 (अट्ठाइस)

केन्द्र शासित राज्यों की संख्या -9 (नव)

विशेषधिकार प्राप्तानि राज्यानि -11(एकादश)

क्षेत्रफल दृष्ट्या सबसे बडा राज्य -राजस्थान (जनसंख्या में- उत्तरप्रदेश)

क्षेत्रफल दृष्ट्या सबसे छोटा राज्य -गोवा (जनसंख्या में- सिक्किम)

भारत का राष्ट्रिय-ध्वज - तिरङ्गा (केसरिया, श्वेत, हरित रंग, मध्य में चौबीस तीलियों वाला एक नीला चक्र. है, केसरिया शक्ति का, श्वेत शान्ति का और हरा समृद्धि का द्योतक है। ल.चौ. अनुपात- 3 : 2 है।)

भारत का राष्ट्रिय-पर्व - 26 जनवरी गणतन्त्रदिवस, 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस, 2 अक्टूबर (गॉन्धी जयन्ति)

भारत का राष्ट्रिय-पुरस्कार - भारतरत्न, पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण

संविधान द्वारा स्वीकृत-भाषा -22 (संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वीकृत)

भारत में व्यवहृत मातृभाषाएँ -1652 (एक हजार छः सौ बावन)

भारत की राष्ट्रिय-भाषा - हिन्दी

भारत की राष्ट्रिय-लिपि - देवनागरी

भारत की सांस्कृतिक भाषा - संस्कृत-भाषा

भारत का राष्ट्रिय-वाक्य - सत्यमेव जयते-सत्य की ही जीत होती है (मुण्डकोपनिषद्)

भारत का राष्ट्रिय-उद्घोष - श्रमेव जयते

भारत की राष्ट्रिय-मुद्रा - रूपया

भारत की राष्ट्रिय-विदेशनीति - गुट-निरपेक्ष

राष्ट्रिय सूचनापत्र (दस्तावेज) - श्वेतपत्र

भारत का राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग- शक संवत् 78 (ग्रिगेरियन कैलेण्डर आधारित)

राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग की स्वीकृति- 22 मार्च 1957

भारत का राष्ट्रिय-ध्वजगीत - हिन्द देश का प्यारा झण्डा

भारत का राष्ट्रिय-चिह्न - सिंह स्तम्भ (अशोक) की शीर्ष अनुकृति, 26 जनवरी 1950 को इसे अपनाया गया।

भारत का राष्ट्रिय-सांस्कृतिक प्रतीक - मङ्गल-कलश

भारत का राष्ट्रिय-फल - आम्रम्/ आम

भारत की राष्ट्रिय-मिठाई - जलेबी

भारत की राष्ट्रिय-क्रीडा - हॉकी

भारत का राष्ट्रिय-जलीय-जीव - डाल्फिन मछली (एक स्तनधारी जलीय जीव)

भारत की राष्ट्रिय-नदी - गङ्गा नदी

भारत का राष्ट्रिय-वृक्ष -	वट-वृक्ष
भारत का राष्ट्रिय-पुष्प -	कमल (शान्ति का प्रतीक)
भारत का राष्ट्रिय-पक्षी -	मयूर (पावो क्रिस्टेसस)
भारत का राष्ट्रिय-पशु -	बाघ (व्याघ्र)
राष्ट्रीय विरासत पशु-	गज (हाथी 13 अक्टूबर 2010 से)
भारतीय संविधान लिखा गया है	-मूलतः अंग्रेजी,1950 में हिन्दी अनुवाद भी हुआ

भारत का राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,	**हे, भारत के जन गण और मन के नायक (जिनके हम अधीन है)**
भारत-भाग्य-विधाता।	आप भारत के भाग्य के विधाता हैं, (वह भारत जो)
पञ्जाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा,	पञ्जाब, सिन्धु, गुजरात और महाराष्ट्र-
द्राविड-उत्कल-बंग,	तमिलनाडु, उड़ीसा और बंगाल (जैसे राज्यों से बना है)
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना गंगा,	जहाँ विन्ध्याचल और हिमाचल जैसे पर्वत हैं,
उच्छल-जलधि-तरङ्ग,	यमुना और गंगा जैसी नदियों की उच्छश्रृंखल तरङ्गें हैं,
तव शुभ नामे जागे,	आपका शुभ नाम लेकर ही प्रातः उठते हैं, (और
तव शुभ आशिष मांगे,	हम) आपके आशीर्वाद की याचना करते हैं,
गाहे तव जय गाथा,	सभी आप की ही जय गाथा गायें,
जन-गण-मङ्गल-दायक जय हे,	हे सबका मङ्गल करने वाले, आप की जय हो,
भारत-भाग्य-विधाता,	आप भारत के भाग्य विधाता हैं,
जय हे, जय हे, जय हे,	आपकी जय हो, जय हो, जय हो,
जय जय जय जय हे॥	आपकी सदा जय जय जय हो।।

राष्ट्रगान के अवसर एवं स्वाभिमान

-भारतीय नागरिक सैन्य-अधिष्ठापना के अवसरों पर।

-शासकीय कार्यक्रमों के आयोजन अवसर पर।

-सर्वकारीय-कार्यक्रमों में महामहिम राष्ट्रपति, राज्यपाल आदि के आगमन व गमन के अवसर पर।

-राष्ट्रध्वज-सम्मान में। -संस्कृतिक अवसरों पर।

-सेना द्वारा शौर्य-प्रदर्शन के अवसर पर।

-भारत सरकार के द्वारा निर्दिष्ट-सभी अवसरों पर।

(यद्यपि यह सम्भव नहीं हैं कि कोई एक सूची दे दी जाए जिन पर राष्ट्रगान गाने की अनुमति दी जा सके। परन्तु राष्ट्रगान गाने पर तब तक कोई आपत्ति नहीं है जबतक इसे

मातृभूमि को वन्दन करते हुए आदर के साथ गाया जाए और इसकी उचित गरिमा को बनाए रखा जाए। राष्ट्रगान के अवसर पर सावधान मुद्रा अवश्य हो। विशिष्ट-अवसरों पर राष्ट्रगान की आदि-और अन्त की पंक्तियों को भी गाया जाता है। अतः विद्यालयों, विविध संस्थानों/ प्रतिष्ठानों, समितियों, कार्यालयों आदि के दैनिक कार्यक्रमों में आदर-भावपूर्वक राष्ट्रगानं किया जाना चाहिये ।

भारत का राष्ट्र-गान-	जनगणमन अधिनायक जय हे---।
राष्ट्रगान के लेखक-	राष्ट्रकवि गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर।
राष्ट्रगान हेतु निर्धारित काल-	द्विपञ्चाशत् पलम् (52 सेकेण्ड)
राष्ट्रगान में कितनी पंक्तियाँ हैं ?-	13, (मूलतः इसमें 5 पद हैं किन्तु प्रथम पद जिसमें 13 पंक्तियाँ हैं, यही मान्य और गेय हैं।
संक्षिप्त-राष्ट्रगान-का काल-	20 सेकेण्ड (प्रथम एवं अन्तिम पंक्ति)।
'राष्ट्रगान' की स्वीकृति कब मिली?-	24 जनारी 1950
राष्ट्रगान का प्रथम गान कब हुआ?-	27 दिसम्बर 1911 ई. (भारतीय राष्ट्रीय-कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में)

भारत का राष्ट्रगीत

वन्दे मातरम्,
सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्सनां पुलकित-यामिनीम्
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर-भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे मातरम् ।।

राष्ट्रगीत लिया गया है-	बंकिम चन्द्र चटर्जी कृत आनन्दमठ से ।
राष्ट्रगीत गाने की अवधि-	1 मिनट 5 सेकेण्ड
संविधान सभा द्वारा स्वीकृति-	24 जनवरी 1950

भारतीय संविधान

(उद्देशिका)

"हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पन्थनिपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक, गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा, और राष्ट्र की एकता और अखण्डता, सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढाने के लिए दृढ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख

26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, सम्वत् 2006 विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अङ्गीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।''

भारतीय संविधान की विशेषताएँ

भारतीय संविधान विश्व में सबसे लम्बा लिखित संविधान है। इसमें 22 भाग 395 अनुच्छेद तथा 12 अनुसूचियाँ हैं। हमारा संविधान भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित करता है। इसमें सभी भारतीयों को मौलिक अधिकार प्रदत्त हैं।

संविधान सभा की प्रमुख समितियाँ

सञ्चालन समिति	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
संघ संविधान समिति	पं.जवाहर लाल नेहरू
प्रान्तीय संविधान समिति	सरदार बल्लभ भाई पटेल
संघ शक्ति समिति	पं.जवाहर लाल नेहरू
प्रारूप समिति	डॉ.भीमराव अम्बेडकर
झण्डा समिति	जे.बी.कृपलानी
मूल अधिकार उप समिति	जे.बी.कृपलानी

मौलिक अधिकार-

1. समानता का अधिकार	- अनुच्छेद-	14 - 18 पर्यन्त।
2. स्वतन्त्रता का अधिकार	- ,,	19 - 22 ,,
3. शोषण के विरुद्ध अधिकार	- ,,	23 - 24 ,,
4. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार	- ,,	25 - 28 ,,
5. संस्कृति और शिक्षा का अधिकार	- ,,	29 - 30 ,,
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार	- ,,	32

मौलिक कर्त्तव्य-

हमारे मूल कर्त्तव्यों का उल्लेख संविधान के भाग 4-क के अनुच्छेद 51-क में किया गया है। स्वर्ण सिंह समिति की अनुशंसा पर इसे संविधान संशोधन के 42वें अधिनियम 1976 द्वारा शामिल किया गया है।

-संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान का आदर करें।

-भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।

-देश के लिये सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा, स्थान पर आधारित सभी भेद-भाव से परे हो।

-ऐसी प्रथाओं का निर्माण करें जो स्त्रियों का सम्मान करे।

-हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझें और उसका परिरक्षण करें।

-प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उनका संर्द्धन करें।

-वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
-सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें तथा हिंसा से दूर रहें।
-व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरन्तर बढते हुये प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू लें।
-मौलिक कर्त्तव्यों का उल्लंघन दण्डनीय है।
-राष्ट्रगान और राष्ट्रीय ध्वज का अनादर करना दण्डनीय अपराध है।
-मौलिक कर्त्तव्यों के बारे में न्यायालय निर्देश जारी कर सकता है।

भारत की निधियाँ-	**संचित निधि-**	अनुच्छेद 266 (I)
	लोक लेखा निधि-	अनुच्छेद 266 (II)
	आकस्मिक निधि-	अनुच्छेद 267

संविधान संशोधन प्रक्रिया- संविधान के भाग 20 अनुच्छेद 368 में संविधान संशोधन की प्रक्रिया का उल्लेख है। यह संशोधन जनमत संग्रह से नहीं किया जा सकता है। संशोधन के लिए विधेयक को संसद के किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जा सकता है। विधेयक को पास होने के लिए दोनों सदनों से पास होने के बाद राष्ट्रपति से संस्तुति प्राप्त करना आवश्यक होता है।

भारतीय संवैधानिक पद-

शासन के तीन मुख्य अङ्ग- कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका (व्यवस्थापिका), हमारा देश और हमारे राज्य इन्हीं तीन अङ्गों के अन्तर्गत सञ्चालित होते हैं।

1- कार्यपालिका के तीन अंग हैं राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और मन्त्रिपरिषद्, इनके द्वारा देश का प्रशासन, विधियों का पालन, सरकारी नीति तथा विदेश नीति का निर्धारण करना, विधेयकों की तैयारी करना, कानून व्यवस्था बनाये रखना, सामाजिक आर्थिक कल्याण को बढावा देना प्रमुख है।

राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति- संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में होती है अतः राष्ट्रपति कार्यपालिका का प्रधान होता है और मन्त्रिपरिषद् की सलाह से उसका प्रयोग करता है। यह तीनों सेनाओं का प्रमुख भी होता है। भारत के सभी कार्य राष्ट्रपति के नाम से ही किये जाते हैं। भारतीय संघ के सभी अधिकारी राष्ट्रपति के ही अधीनस्थ होते हैं।

-राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमन्त्री तथा उनके परामर्श से अन्य मन्त्रियों को भी नियुक्त किया जाता है। राष्ट्रपति राज्यों के राज्यपालों की भी नियुक्ति करता है।

-राष्ट्रपति दोनों सदनों को सम्बोधित करता है तथा संयुक्त बैठक बुलाता है।

-सभी दशाओं में मृत्युदण्ड तथा क्षमादान की शक्ति राष्ट्रपति में ही निहित है।

-राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों तथा राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य मिलकर अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति (एकल संक्रमणीय अनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली) से करते हैं। इनका शपथग्रहण भारत का मुख्य न्यायाधीश कराता है। राष्ट्रपति का

कार्यकाल/ पदावधि 5 वर्ष का होता है। कोई भी न्यूनतम 35 वर्षीय भारतीय नागरिक जो शासकीय सेवा में अथवा लाभ न ले रहा हो वह राष्ट्रपति पद की योग्यता रखता है।

उपराष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों के सदस्य अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति से करते हैं। यह राज्यसभा का सभापति होता है। राष्ट्रपति अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को सौंपता है। राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति दोनों का पद रिक्त होने पर राष्ट्रपति पद का कार्यभार भारत का मुख्य न्यायमूर्ति सम्भालेगा।

मन्त्रिपरिषद् का प्रमुख प्रधानमन्त्री होता है। परिषद् के प्रत्येक मन्त्री को संसद का सदस्य होना अनिवार्य है। इसमें तीन प्रकार के मन्त्री होते हैं कैबिनेट मन्त्री, राज्यमन्त्री और उपमन्त्री। कार्यपालिका व्यवस्थापिका से नीचे होती है। इसी प्रकार राज्यों में भी राज्य कार्यपालिका कार्य करती है जिसमें राज्यपाल, मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्।

2- न्यायपालिका- भारत की स्वतन्त्र न्यायपालिका का शीर्ष सर्वोच्च न्यायालय है जिसका प्रमुख **प्रधान न्यायाधीश** होता है। इस न्यायालय को अपने मामले और राज्यों के उच्च न्यायालयों के विवादों को देखने का अधिकार है। न्यायपालिका और व्यवस्थापिका के परस्पर मतभेद या विवाद का सुलह राष्ट्रपति करता है। न्यायपालिका क्रमिक शृंखला है जिसमें सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय,

3-विधायिका (व्यवस्थापिका)- कानून निर्माण करने वाला शासन का अङ्ग है। इसमें राष्ट्रपति, राज्यसभा, लोकसभा है। राज्यों में राज्यपाल, विधानमण्डल (विधानसभा, विधान परिषद्) हैं। ये विधायिकाएँ संविधान में निर्दिष्ट शक्तियों के अनुसार अपने अपने क्षेत्रों के लिये विधान (कानून) बनाते हैं। संघात्मक भारतीय विधायिका द्विसदनीय है। जिसमें लोकसभा जिसे निचला या निम्न सदन तथा राज्यसभा जिसे उच्च सदन भी कहते हैं।

भारतीय संवैधानिक आयोग एवं संस्थाएँ-

भारतीय संविधान में जिसका उल्लेख है उन्हें संवैधानिक कहते हैं।

नियन्त्रक महालेखा परीक्षक (कैग), महान्यायवादी (अटार्नी जनरल), महाधिवक्ता, निर्वाचन आयोग, वित्त आयेग, संघ लोकसेवा आयोग, राज्य सेवा आयोग, अन्तर्राज्यीय विकास परिषद्, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, राजभाषा आयोग आदि। इनमें किसी भी संशोधन के लिये सदन में ले जाना होता है।

भारतीय गैर संवैधानिक आयोग एवं संस्थाएँ-

गैर संवैधानिक अर्थात् जिसका संविधान में उल्लेख नहीं किया गया है इसे संविधानेतर भी कहा जाता है। (इसका तात्पर्य संधिान के खिलाफ नहीं है)।

-इसमें सांविधिक, वैधानिक, कानूनी को लिया गया है। जो संसद या किसी विधानमण्डल द्वारा किसी कानून के अधीन बनाये गये किसी संस्था, आयोग को सांविधिक कहते हैं। जैसे- मानवाधिकार आयोग, महिला आयोग, सूचना आयोग, लोकपाल, लोकायुक्त, सी.बी.आई, सी.बी.सी. आदि।

(कार्यकारी परिषद्- अर्थात् कैबिनेट से जिनका गठन किया जाए। जैसे योजना आयेग, नीति आयोग, विकास परिषद् आदि) इसे कभी भी हटाया या बदला जा सकता है।

संख्या की दृष्टि से भारतीय ज्ञान-विज्ञान का गौरव

प्रथम

स्वतन्त्र भारत के प्रथम- राष्ट्रपति-	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
स्वतन्त्र-भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति-	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
स्वतन्त्र-भारत के प्रथम शिक्षामन्त्री-	अबुल कलाम आजाद
स्वतन्त्र भारत के प्रथम- प्रधानमन्त्री-	पं. जवाहर लाल नेहरू
स्वतन्त्र भारत के प्रथम- गृहमन्त्री-	सरदार बल्लभ भाई पटेल
स्वतन्त्र भारत के प्रथम मुस्लिम राष्ट्रपति-	डॉ0 जाकिर हुसैन
स्वतन्त्र भारत की प्रथम-महिला प्रधानमन्त्री-	श्रीमती इन्दिरा गॉन्धि
,, प्रथम/अन्तिम गर्वनर जनरल अधिकारी-	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
भारत का प्रथम गर्वनर जनरल अधिकारी-	लार्ड विलियम बेंटिक
प्रथम-भारतीय अन्तरिक्षयात्री, महिला-	कल्पना चावला
प्रथम-भारतीय अन्तरिक्षयात्री, पुरुष-	स्क्वाडन लीडर रोकश शर्मा
'भारतरत्न' प्राप्तकर्ता प्रथम भारतीय-	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
'भारतरत्न' प्राप्तकर्तृ प्रथम महिला-	श्रीमती इन्दिरा गान्धी
'नोबेल पुरस्कार' प्राप्तकर्त्ता प्रथम भारतीय-	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
मैग्सेसे पुरस्कार-प्राप्तकर्त्ता प्रथम भारतीय-	आचार्य विनोवा भावे
भारत में प्रथम महिला मुख्यमन्त्री-	सुचेता कृपलानी
प्रथम-महिला राज्यपाल -	सरोजिनी नायडू (उ.प्र.)
प्रथम-महिला आई. पी. एस. अधिकारी -	किरण बेदी (मैगशेषे पुरस्कृता)
स्वतन्त्र-भारत का प्रथम प्रक्षेपास्त्र-	पृथ्वी
भारत का प्रथम उपग्रह -	आर्यभट्ट
भारत का प्रथम फिल्म- (मूक)	राजा हरिश्चन्द्र, 1913, निर्माता- दादा साहब फाल्के
भारत का प्रथम फिल्म-- (सवाक्)	आलम आरा-1913, ए.एम.ईरानी
विश्व का प्रथम ग्रन्थ -	वेद (ऋग्वेद)
विश्व का प्रथम/ सर्वप्राचीन मानव धर्म-	सनातन धर्म (हिन्दु धर्म)
पातञ्जल योगसूत्र का प्रथम सूत्र-	अथ योगानुशासनम्
वेदान्त दर्शन का प्रथम सूत्र-	अथातो ब्रह्म जिज्ञासा
श्रीमद् -भगवद् -गीता का पहला श्लोक -	धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥

हे सञ्जय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्रित युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया? (धृतराष्ट्र ने सञ्जय से प्रश्न किया)

विश्व में प्रथम

विश्व का प्रथम मानव धर्म	-सनातन धर्म (हिन्दु धर्म)
खगोल विज्ञान एवं गणित का प्रथम विद्वान्	-आर्यभट्ट
परमाणु बम से विनष्ट प्रथम शहर	-हिरोशिमा
एशियाई खेलों का प्रथम आयेजन	-नई दिल्ली भारत
चन्द्रमा पर कदम रखने वाला प्रथम व्यक्ति	-नील आर्मस्ट्रांग
सर्वाधिक शाखाओं वाला बैंक	-भारतीय स्टेट बैंक
पुस्तक मुद्रित करने वाला प्रथम देश	-चीन
विश्व में सर्वोच्च प्रतिमा-	-सरदार बल्लभ भाई पटेल, गुजरात
विश्व में सबसे बडा देश	-रूस

द्वितीय/ दो

दो आयन- **उत्तरायण, दक्षिणायन** (एक वर्ष में सूर्य माघ से लेकर फागुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ तक छः माह उत्तरायण रहता है, इसमें मकरसंक्रान्ति होती है। और सावन से लेकर भाद्रपद, आश्विन्, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पूष तक सूर्य दक्षिणायन रहता है इसमें कर्क राशि की संक्रन्ति होती है)।

दो पक्ष-	**शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष (15-15 दिनों का होता है)।**
महाकवि-कालिदास के दो महाकाव्य-	**रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्**
दो प्रकार का शौच (पवित्री करण)-	**वाह्य** (स्नानादि द्वारा) **आभ्यन्तर** (प्राणायाम-सन्ध्या वन्दनादि के द्वारा शरीर की शुद्धि होती है।

तृतीय

संस्कृत-व्याकरण के अनुसार-

तीन पुरुष (Persons) -	**प्रथम-पुरुष, मध्यम-पुरुष,उत्तम-पुरुष**
तीन काल (Tense) -	**भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यकाल**
तीन वचन (Numbers) -	**एकवचन, द्विवचन, बहुवचन**
तीन लिङ्ग (Genders) -	**पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग**
त्रिवेणी-	**गंगा, यमुना, सरस्वती (संगम, प्रयाग)**
त्रिदेव/ तीन देव-	**ब्रह्मा, विष्णु, महेश**
तीन ऋण -	**पितृऋण, ऋषिऋण, देवऋण**
त्रिवर्ग-	**धर्म, अर्थ, काम**
वेदत्रयी-	**ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद**
तीन स्वर (वेद में) -	**उदात्त, अनुदात्त, स्वरित**
दिन के तीन भाग -	**पूर्वाह्ण, मध्याह्न, अपराह्ण**
त्रिविध आचमन -	**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः**

(सनातन धर्म में स्नान द्वारा शरीर की बाह्य शुद्धि, उसके बाद दायें हाथ में जल लेकर तीन बार इन तीन नामों का उच्चारण करते हुए मन में विष्णु भगवान् का ध्यान पूर्वक उसे ग्रहण करने से आन्तरिक शुद्धि होती है, ऐसी मान्यता है)।

भारतीय-शासन के तीन अङ्ग - **व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका**

लघुत्रयी - रघुवंशमहाकाव्यम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्

(महाकवि कालिदास के द्वारा रचित तीन काव्यों को लघुत्रयी के नाम से जाना जाता है-

1. रघुवंशमहाकाव्यम् - 19 सर्ग, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के वंशजों का वर्णन, इसमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम सहित कुल--- सूर्यवंशी राजाओं का वर्णन है।

2. कुमारसम्भवम् - 17 सर्ग, इसमें भगवान् शिव और माता पार्वती से कुमार स्वामी अर्थात् स्वामी कार्तिकेय की उत्पत्ति का वर्णन है।

3. मेघदूतम् - 2 खण्ड (पूर्व-उत्तर) यह खण्डकाव्य, दूतकाव्य, गीतिकाव्य आदि के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें नायक यक्ष (हेममाली) अपनी प्रिया-पत्नी (विशालाक्षी) को मेघ से सन्देश भेजता है)।

शतकत्रयी (तीन शतक) - **श्रृंगारशतक, वैरागयशतक, नीतिशतक (भर्तृहरि)**

कालिदास के तीन नाटक- **अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्नि-मित्रम्**

प्राचीन-भारत की तीन लिपियाँ - **ब्राह्मी, खरोष्ठी, सिन्धु।**

तीन अवस्थाएँ - **जाग्रदवस्था, स्वप्नावस्था, सुषिप्ति-अवस्था।**

तीन नास्तिक-दर्शन - **चार्वाक-दर्शन, जैन-दर्शन, बौद्ध-दर्शन।**

प्रस्थानत्रयी (मोक्षसाधक ग्रन्थ)- **ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद्।**

बृहत्त्रयी (विशाल महाकाव्यम्)- **शिशुपालवधम्-कवि-माघ, किरातार्जुनीयम्-कवि भास, नैषधीयचरितम्-कवि-श्रीहर्ष।**

तीन व्याकरण के मुनि- **पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि (त्रिमुनि व्याकरण)।**

ताप-त्रय (तीन ताप)- **दैहिक, दैविक, भौतिक।**

त्रिविध-भूमि (भूमि के तीन प्रकार)-**उन्नत, निम्न, सम**

त्रिविध-प्राणायाम - **पूरक, कुम्भक, रेचक**

भारत की तीन निधियँ- **संचित निधि, लोक लेखा निधि, आकस्मिक निधि।**

चतुर्थ/ चार

चार आश्रम - **ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ।**

चार वर्ण - **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।**

चार पुरुषार्थ - **धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।**

ब्राह्मा के चार मानसपुत्र- **सनकः, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार** (चार ऋषि)।

चार प्रमाण (न्यायदर्शन में)- **प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द।**

चार मठ पूरब में- **गोवर्धनमठ,** पुरी-उत्कलप्रदेश। पश्चिम में- **शारदामठ,** द्वारका-सौराष्ट्र-गुजर्रप्रान्त, उत्तर में- **ज्योर्तिमठ,** बद्रीनाथ-उत्तराखण्ड, दक्षिण में- **शृंगेरीमठ,** शृंगेरी-कर्णाटक।

(श्रीमद् आद्य जगद् गुरु शङ्कराचार्य जी ने सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु चारों

दिशाओं में चार मठों की स्थापना की थी, आज इन पीठों पर चार शङ्कराचार्य हैं)।

चार दिशाएँ -	**पूरब (प्राची), पश्चिम (प्रतीची), उत्तर (उदीची), दक्षिण (अवाचि) ।**
चार उपदिशाएँ -	**(अ,इ,ब,न) अग्निकोण-** (पूर्व और दक्षिण का कोन), **ईशानकोण-** (पूर्व और उत्तर का कोन), **वायव्यकोण-** (उत्तर और पश्चिम का कोन), **नैऋत्यकोण-** (पश्चिम और दक्षिण का कोन) ।
चार सेनाएँ/ सेना चतुष्टय -	**रथ, गज, अश्व, पदाति** (प्राचीन काल में युद्ध में चार प्रकार के सैनिक होते थे, रथी, हाथी, घोड़े और पैदल)
जीवन की चार अवस्थाएँ-	**बाल्य, कौमार, यौवन, वार्धक्य (बुढापा)।**
नीति-चतुष्टय (चार नीतियाँ) -	**साम, दाम, दण्ड, भेद।**
गति-चतुष्टय -	**देवगति, मनुष्यगति, तिर्यग्गति, नारकगति।**

(जीवन पर्यन्त किये गये कर्मों के अनुसार मनुष्य की चार प्रकार की गतियाँ होती हैं)

विनम्रता चार को बढाती है-	**आयु, विद्या, यश, बल (शक्ति)।**

पञ्चम/ पाँच

पञ्चामृतम्	-दुग्ध, दधि (दही), घृत, मधु, शर्करा (चीनी/शक्कर)।
पञ्चाङ्गम्	-तिथि, दिन, नक्षत्र, करण, योग।
पाँच महाव्रत	-अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
पञ्च महाभूत	-पृथिवी, जलम्, तेजः, वायुः, आकाशम्।
पाँच सरोवर	-बिन्दु, नारायण, मानसरोवर पुष्कर पम्पा।
पञ्च-गव्य	-दुग्ध, दधि, घृत, गोमय (गोबर), गोमूत्र।
पञ्च पल्लव	-वट- (न्यग्रोध), गूलर- (उदुम्बर) पीपल- (अश्वत्थ) आम्र, पाकड़- (प्लक्षः)।
पञ्चरत्न	-स्वर्ण, हीरा, मुक्ता, पद्मराग, नीलम।
पञ्च देव	-गणेश, सूर्य, दुर्गा, शिव, विष्णु।
पञ्चोपचार (पूजन हेतु)	-गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य (भोग)।
पाँच नियम	-पवित्रता, सन्तोष, तप, स्वाधाय, धर्म में विश्वास।
पाँच मानविन्दु	-गणेश, गंगा, गौ, गीता, गायत्री।
पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ	-नेत्र, नासिका, कर्ण, जिह्वा, त्वक् (आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा)।
पाँच कर्मेन्द्रियाँ	-वाक्, हस्त, पाद, पायु, उपस्थ (मुख, हाथ,------------
पाँच तन्मात्राएँ	-गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द।
पञ्च कोष	-अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय।
पञ्च यज्ञ	-देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, ब्रह्मयज्ञ।
पञ्च कन्या	-अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी।

हिमालय के पाँच शिखर	-गौरीशंकर (एवरेस्ट), कंचनजंघा, धौलगिरि, नन्दादेवी, अन्नपूर्णा
पञ्च-पाण्डव	-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।
कामदेव के पञ्च-बाण	-अरविन्द, अशोक, चूत, नवमल्लिका, नीलोत्पल
भारत के पाँचवें-राष्ट्रपतिः	-न्यायमूर्ति मुहम्मद हिदायतुल्लाह (कार्यवाहक)
,, पाँचवीं प्रधानमंत्री	-श्रीमती इन्दिरा गाँधी।
,, पाँचवें-उपप्रधानमंत्री	-श्री वाई. बी. चौह्वाण।

षष्ठ/ छः

षड्-दर्शन-(आस्तिक),	-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त।
षड्-रस- (जिह्वा के)	-मधुर, आम्ल, लवण, कटु, कषाय, तिक्त।
वेद के षड् अङ्ग	-शिक्षा, कल्प, ज्यौतिष, निरुक्त, छन्द, व्याकरण।
व्याकरण में छः कारक	-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।
षड् ऋतुएँ	-शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त।
शरीर के छः दोष	-निन्द्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य, दीर्घसूत्रता।
उन्नति के छः शत्रु	-काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर।
छः नित्यकर्म	-स्नान, सन्ध्या, जप, अग्निपूजा, अतिथिपूजा।
शरीर में स्थित छः चक्र	-मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा।

भारतीय संविधान के मूलभूत छः अधिकार-

1. समानता का अधिकार	- अनुच्छेद-	14 - 18	पर्यन्त।
2. स्वतन्त्रता का अधिकार	- ,,	19 - 22	,,
3. शोषण के विरुद्ध अधिकार	- ,,	23 - 24	,,
4. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार	- ,,	25 - 28	,,
5. संस्कृति और शिक्षा का अधिकार	- ,,	29 - 30	,,
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार	- ,,	32	

भारत के छठें राष्ट्रपति	-बराहगिरी वेंकेटगिरि।
,, के छठें प्रधानमंत्री	-मोरारजी देसाई।
,, छठें उप-प्रधानमंत्री	-चौधरी देवीलाल।

सप्त/ सात

सप्त पुरियाँ- **अयोध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका।**
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः॥

1. अयोध्या (अवध) उ0प्र0	-भगवान् श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि, सरयू नदी।
2. मथुरा उ0प्र0	-भगवान् श्रीकृष्णा की जन्मभूमि, यमुना नदी।
3. मायापुरी (हरिद्वार) उत्तराखण्ड	-कुम्भ स्थान, गंगा नदी।
4. काशी (वाराणसी,आनन्द वन) उ0प्र0	-विश्वनाथ-ज्योतिर्लिंग, गंगा नदी।

5. काञ्ची- तमिलनाडु — -आद्य शङ्कराचार्य का मठ, दक्षिण काशी।

6. अवन्तिका (उज्जैन म0प्र0) — -महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, कुम्भस्थल, विक्रमादित्य की राजधानी, क्षिप्रा नदी।

7. द्वारका (द्वारावती गुजरात) — -श्रीकृष्ण की राजधानी, आद्यशङ्कराचार्य के द्वारा स्थापित शारदापीठ ।

सप्त-ऋषि

कश्यपोऽत्रिः भरद्वाजः- विश्वामित्रोऽथ गौतमः।
जगदग्निः वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥
-कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वसिष्ठ।

सप्त चिरजीवी

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
-अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम।

सात विभक्तियाँ -प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी।

सप्त द्वीप -जम्बू, शाल्मल, क्रौञ्च, कुशद्वीप, शाकद्वीप, पुष्कर, लक्षद्वीप। (भारत जम्बूद्वीप में आता है)

सात पदार्थ (न्याय दर्शन) -द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

सात दिन/वार (सप्ताह) -रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार।

सप्त सागर -लवण, इक्षु, आज्य, दधि, क्षीर, स्वादुजल, मधु-सागर।

सप्त अधोलोक -अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।

सप्त ऊर्ध्वलोक -भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक।

सात काण्ड (रामचरितमानस)-बाल, अयोध्या, किष्किन्धा, सुंदर, लंका, अरण्य, उत्तर।

मुख्य सात पर्वत -महेन्द्र (उड़ीसा), मलयगिरि-(कर्णाटकः, तमिलनाडु), सह्याद्रि-(महाराष्ट्र), हिमालयः, रैवतक-(काठियावाड़), विन्ध्यक-(विन्ध्याचल), अरावली-(राजस्थान)।

संगीत के सप्त स्वर -षडज्, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत, निषाद्।

सप्त-मृत्तिका -अश्वशाला, गजशाला, वल्मीक-मृत्तिका-(बाँबी), संगम-(नदियों का) तडाग (तालाब), राजद्वार, गोशाला।

सप्त-धान्य -यव-(जौ), धान्य-(धान), तिल, मूग, चणक-(चना), श्यामक-(साँवा), गोधूम-(गेंहूँ)। (सात स्थानों की मिट्टी और सात प्रकार के अन्नों को शुद्ध माना जाता है, और इनका प्रयोग हिन्दु धर्म की पूजन सामग्री में भी होता है)।

विश्व के सात आश्चर्य -ताजमहल- भारत, चीन की दीवार- चीन, पेट्रा- जॉर्डन, क्राइस्ट द रिडीमर की मूर्ति-ब्राजील, माचू-पीचू के इंकान खण्डहर-पूरू, चिचेना इत्जा पिरामिड- मेक्सिको, रोमन कोलोसियम- रोम।

सातवें प्रधानमन्त्री -चौधरी चरण सिंह।

सातवें उपप्रधानमन्त्री -चौधरी देवीलाल।

अष्टम/ आठ

अष्ट-धातु -स्वर्ण, रजत, रांगा, ताम्र, जस्ता, शीशा, पारद, अयस्।
अष्ट-गन्ध -अगर, तगर, चन्दन, कस्तूरी, रक्तचन्दन, कुंकुम, देवदारु, केसर।
अष्ट-सिद्धियाँ -अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईश्वत्व, वशित्व।
अष्टांग-योग -यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।
अष्टविध अन्न -भोज्य, पेय, चोष्य, लेह्य, खाद्य, चर्व्य, निपेय, भक्ष्य।
साष्टाङ्ग नमस्कार -पाद, जानु, पाणि, वक्ष, बुद्धि, शिर, वाणी, दृष्टि।
(इन शारीरिक अङ्गों के एक साथ नमस्कार की मुद्रा को साष्टाङ्ग प्रणाम कहते हैं)।
अष्टविध विवाह -ब्राह्म, प्राजापत्य, आर्ष, देव, गान्धर्व, आसुर, पैशाच, राक्षस।
अष्टविध गणना -वर्ण, वैश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाडी।
(हिन्दु धर्म में विवाह पूर्व इन आठों का कुण्डली /ज्योतिषीय मिलान किया जाता है)।
अष्ट-लक्ष्मी -आद्यलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, अमृतलक्ष्मी, कामलक्ष्मी, सत्यलक्ष्मी, भोगलक्ष्मी, योगलक्ष्मी।
अष्टाङ्गिक मार्ग -सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि।
आठवें राष्ट्रपति -बी0डी0 जत्ती- (कार्यवाहक) ।
,, प्रधानमन्त्री -इन्दिरा गाँधी।
,, उपप्रधानमंत्री -लालकृष्ण आडवाणी।

नवम/ नव

नव ग्रह -सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।
नव स्वर (व्याकरण के) -अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ।
नव रस (साहित्यशास्त्र में) -शृंगार-वीर, करुण-अद्भुत, हास्य-भयानक, वीभत्स-रौद्र, शान्त
नव दुर्गा (नव शक्तियाँ) -शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, दुर्गा।
नव द्रव्य (न्यायदर्शन में) -पृथिवी-जल, अग्नि-वायु, आकाश-काल-दिक्, आत्मा-मन।
नवगुण (यज्ञोपवीत के) -शम, दम, तप, पवित्रता, क्षमा, सरलता,ज्ञानम्, आस्तिकता।
नवधा भक्ति -श्रवण-कीर्तन, सेवा-पूजा-वन्दना, दासता-मित्रता, आत्मनिवेदन।
नव रत्न -मुक्ता, माणिक्य, वैदूर्य-(लहसुनिया), गोमेद, वज्र-(हीरा), विद्रुम, पद्मराग, मारकत, नील।
विक्रमादित्य के नव सभारत्न-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि।
भारत के नवें राष्ट्रपति -नीलम संजीव रेड्डी।
,, प्रधानमंत्री -राजीव गाँधी।

दशम/ दश

भगवान् विष्णु के दश अवतार -मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

धर्म के दश लक्षण -धृति, क्षमा, दम, स्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध।

दशविध वक्तृत्व-कला -परिभावित, सत्य, मधुर, सार्थक, परिस्फुट, परिमित, मनोहर, विचित्र, प्रसन्न, भावानुगत।

दश कामावस्था -अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकीर्तन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरण।

दश गण (व्याकरण के) -भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्रयादि, चुरादिगण।

प्रमुख दश उपनिषद -ईशावास्योपनिषद्, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदाण्यक उपनिषद्।

दश दिशाएँ -पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण-(चार दिशाएँ और), अग्नि, ईशान, वायव्य, नैऋत्य- (चार कोण अर्थात् दिशाओं की सन्धियाँ और) आकाश तथा, पृथिवी।

दश दिग्पाल -इन्द्र, अग्नि, यम, निऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त (दश दिशाओं के ये दश स्वामी कहे गये हैं)।

भारत के दशवें राष्ट्रपति -ज्ञानी जैलसिंह।

,, प्रधानमन्त्री -विश्वनाथ प्रताप सिंह।

एकादश/ ग्यारह

एकादश-रुद्र -पशुपति, शिव, विरूप, विश्वरूप, भैरव, त्र्यम्बक, शूलपाणि, कपर्दिन्, ईशान, महेश। (भगवान् शिव के रूप/नाम हैं)

प्रमुख ग्यारह नदियाँ -गंगा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, गण्डकी, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा (रेवा) कावेरी, कृष्णा, गोदावरी, महानदी च।

भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति -आर0 वेंकट रमन् ।

" ,, प्रधानमन्त्री -चन्द्रशेखर सिंह

द्वादश/ बारह

द्वादश-सूर्यनमस्कार मन्त्र -ॐ मित्राय नमः, ॐ रवये नमः, ॐसूर्याय नमः, ॐ भानवे नमः, ॐ खगाय नमः, ॐ पूष्णे नमः, ॐ हिरण्यगर्भाय नमः, ॐ मरीचये नमः, ॐ आदित्याय नमः, ॐ सवित्रेनमः, ॐ अर्कायनमः, ॐ भास्कराय नमः, ॐ श्रीसवितृ-सूर्यनारायणाय नमः।

(सूर्य नमस्कार में 12 आसन हैं जिन्हें करते समय इन मन्त्रों का पाठ किया जाता है)।

बारह राशियाँ	-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु मकर, कुम्भ, मीन।
बारह मास	-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग	-सोमनाथ-गुजरात, मल्लिकार्जुन-आन्ध्रप्रदेश, महाकाल-मध्यप्रदेश, ओंकारेश्वर-छत्तीसगढ़, वैद्यनाथ-महाराष्ट्र,झारखण्ड, भीमशंकर-महाराष्ट्र, रामेश्वरम् -तमिलनाडु, नागेश्वर/घृष्णेश्वर-गुजरात, विश्वनाथ-उत्तरप्रदेश, घुश्मेश्वर/घृष्णेश्वर- महाराष्ट्र। केदारनाथ- उत्तराखण्ड, त्रयम्बकेश्वर- महाराष्ट्र।
भारत के बारहवें राष्ट्रपति	-डॉ0 शंकर दयाल शर्मा।
,, ,, प्रधानमन्त्री	-पी0वी0 नरसिम्हा राव।
भारत के तेरहवें राष्ट्रपति	-के0आर0 नारायणनत्रयम्।
,, ,, प्रधानमन्त्री	-अटल बिहारी वाजपेयी।

चतुर्दश/ चौदह

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र	-अइउण्, ॠलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधष्, जबगडदश्, खफछठथचटतव्, कपय्, शषसर्, हल्। (व्याकरण के ये चौदह सूत्र हैं)।
चौदह भुवनानि	-भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महलोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।
भारत के चौदहवें राष्ट्रपति-	-डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम।
,, ,, प्रधानमन्त्री	-एच0डी0 देवगौड़ा।
भारत के पन्द्रहवें राष्ट्रपति-	
,, ,, प्रधानमन्त्री	-इन्द्र कुमार गुजराल।

षोडश/ सोलह

सोलह संस्कार	-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास, अन्त्येष्टि।
षोडशोपचार-पूजन-सामग्री	-आसन, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, दक्षिणा, नमस्कार।
चन्द्रमा की सोलह कलाएँ	-अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, द्युति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्सना, श्रीः, प्रीति, अङ्गदा, पूर्णा।
सोलहवें प्रधानमन्त्री	-अटल बिहारी वाजपेयी।

भारतीया संस्कृतिः

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" (यजु0 7.14)

(वह भारतीय वैदिकसंस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन और श्रेष्ठ संस्कृति है।)

संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति-

सम् उपसर्गकः कृञ् धातुः, क्तिन् प्रत्ययः, भूषण (शोभा या अलंकार) अर्थे सुट् आगमः 'संस्कृतिः' इति सिध्यति। (सम्+सुट्+कृ+क्तिन् = मकारस्य अनुस्वारः, प्रथमा-विभक्ति-एकवचने संस्कृतिः इति। 'संस्कृति' शब्दस्यार्थः - सुन्दरम्, श्रेष्ठः, परिष्कृतम्।

परिभाषा-

श्री के.एम. मुन्शी- हमारे रहन-सहन के पीछे जो हमारी मानसिक प्रकृति है जिसका उद्देश्य जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है, वही संस्कृति है।

जी.पी0 सिंहलः- संस्कृति में वे संस्कार होते हैं जो व्यक्ति और राष्ट्र के प्रत्येक व्यवहार में दृष्टिगोचर होते हैं।

डॉ0 सम्पूर्णानन्दः- मानव के जिन कार्यों से किसी देश-विशेष के सम्पूर्ण समाज पर कोई अमिट छाप पड़े, वही स्थायी प्रभाव ही संस्कृति है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी- संस्कृति मनुष्य की ऊर्ध्वगामिनी प्रवृत्ति का विकास है।

इस प्रकार संस्कृति मानव जीवन के अन्तरङ्ग स्वरूप को प्रकाशित करती है। मनुष्य स्वभावतः विवेकशील प्राणी है । वह अपने विवेक से अपने चारों तरफ के वातावरण को निरन्तर परिष्कृत करता रहता है तथा जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण स्थापित करता है। इस तरह इसमें धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला सामाजिक व राजनैतिक संस्थाओं एवं प्रथाओं का समावेश रहता है। **संस्कृति का सम्बन्ध** मानव-बुद्धि, स्वभाव और उनकी मनोवृत्ति से होता है जिनके सहयोग से मनुष्य अपना विकास करता है। संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समूचे समाज में ओतप्रोत रहती है तथा असंख्य व्यक्तियों के युग-युग के प्रयासों का परिणाम होता है। यही राष्ट्रीय संस्कृति कहलाती है।

"संस्कृति मानव-जीवन की शक्ति, प्रगति-साधनों की विमल विभूति तथा राष्ट्रीय आदर्श की गौरवमयी मर्यादा है।"

सभ्यता-

सभ्यता का अर्थ है सभा या समाज में रहने व बैठने की योग्यता। 'सभा' से यत् तथा तल् प्रत्यय लगकर 'सभ्यता' शब्द की निष्पत्ति होती है। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची शब्द है 'सिविलाइजेशन' (Civiligetion) जिसका सम्बन्ध सिविल (Civil) नागरिक से है।

संस्कृति और सभ्यता में अन्तर-

संस्कृति-	सभ्यता-
1. यह सम्यक् कृति है	1. यह सामाजिक नियम एवं व्यवहार का आचरण है।
2. यह आभ्यान्तर है	2. यह वाह्य है।
3. यह स्थायी है, सूक्ष्म है,	3. अस्थायी है, सहजतया परिवर्तनशील है ।
4. यह आत्मा है।	4. यह शरीर है।
5. मानसिक एवम् आन्तरिक है।	5.यह वाह्य तथा भौतिक है।

अतः जीवन-व्यापार के आदर्शों के जो संस्कार किसी राष्ट्र में अथवा व्यक्ति में स्थापित होते हैं वह संस्कृति तथा उनके आधार पर जो भौतिक सुविधाओं का निर्माण करते हैं वह सभ्यता है। हमारे रहन-सहन का ढंग, हमारी कार्य प्रणाली, हमारी राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप हमारे वैज्ञानिक और भौतिक साधन हमारी सभ्यता के स्तर के मापदण्ड हैं, किन्तु उनमें निहित सिद्धान्त तथा मूल्य, आदर्श तथा दर्शन हमारे सांस्कृतिक विकास के सूचक हैं।

भारतीय-संस्कृतेः वैशिष्ट्यम्-

1. सर्वप्राचीनता/ सनातनता- भारतीय संस्कृति मानव-सभ्यताकाल से आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है। हड़प्पा, मोहन जोदड़ों, पूर्वपाषाणकाल में खुदाई से प्राप्त अवशेष इसकी प्राचीनता और सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध करते हैं। विश्व के अन्य भागों की संस्कृतियां जब जन्म ले रही थीं तो उस समय भारतीय संस्कृति पूर्ण विकसित तथा पल्लवित हो चुकी थी। दूसरे देशों ने हमारी संस्कृति से ही शिक्षा प्राप्त की- आचार्य मनु ने कहा भी है कि-

एतत्-देश-प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ (मनुस्मृतिः 2.20)

इस देश भारत में उत्पन्न अग्रजन्मा ब्रह्मज्ञानियों से पृथिवी पर रहने वाले सभी प्राणी अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

2. अद्भुत् समन्वय-शक्तिः- भारत एक विशाल देश है। इसकी जनसंख्या 127 करोड है। यहाँ की जलवायु विविध प्रकार की है। यहाँ आर्य, द्रविड़, किरात, मुण्डा आदि अनेक जातियों के लोग रहते हैं। जिससे इसे जातियों का 'अजायबघर' कहा जाता है। हिन्दी, बंगाली, गुजराती, मराठी, पञ्जाबी आदि अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि अनेक धर्मों के लोग रहने हैं,

सबकी सभ्यता (रहन-सहन खान-पान, वेशभूषा) भिन्न होने के कारण कुछ विद्वानों ने इसे धर्मों, भाषाओं, विश्वासों, रीति-रिवाजों का संग्रहालय कहा है।

3. अनेकतायाम् एकता- अनेकता में एकता इसकी प्रमुख विशेषता है। यहाँ के लोगों में मूल, वंश, धर्म और भाषा की विविधता होते हुए भी आधारभूत एकता बनी रही। आर्यों, द्रविणों, शकों, हूडों आदि विभिन्न भाषा-भाषियों, विभिन्न धर्माऽनुयायियों, अहिंसावादियों, आस्तिकों, नास्तिकों आदि में विभिन्न दृष्टियों से महान अन्तर रहे तथापि आधारभूत एकता पाई जाती है।

भारतीय संस्कृति सांस्कृतिक एकता और एकरूपता, सामाजिक तथा धार्मिक संस्कारों और उत्सवों में प्रकट होती है। इस प्रकार नाना भेदों, नाना संस्कृतियों के बावजूद अनेकता में एकता का सन्देश हमारी संस्कृति ही देती है। इसका उद्घोष है- **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है।

4. अध्यात्मभावना- मानव जीवन भोग के लिए नहीं अपितु आत्म उन्नति का प्रमुख साधन है। अतः भारतीय जन-जीवन का लक्ष्य मोक्षप्राप्ति, देवत्व प्राप्ति है। **फलतः अध्यात्म भावना भारतीय संस्कृति का प्राण है।**

ईशावास्यम् इदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ (ईशावास्योपनिषद् 1)

इस संसार में जो कुछ जड़ जंगम है वह ईश्वर से व्याप्त है। तू त्याग भावना से उनका भोग कर, लालच न करो धन किसका हुआ है।

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।

वास्तविक द्रष्टा वही है, जो अपने समान सभी जीवों प्राणियों को देखता है।

5. धर्म का आचरण-धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥

धर्म का लोप करने वाले को धर्म ही मारता है, वही धर्म अपनाये जाने पर रक्षा करता है। अतः धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। (मनुस्मृतिः-)

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। गीता

अपने आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म श्रेष्ठ है, अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है, क्योंकि दूसरे का धर्म भयावह होता है।

धर्म क्या है- धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।
यः स्याद् धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥

जिसे धारण किया जाय और जो सबको धारण करे, और जो उससे संयुक्त हो

उसे धर्म कहते है। (मनुस्मृतिः-)

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्म- जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस् (इहलोक, परलोक) की सिद्धि हो उसे धर्म कहते हैं। (गीता)

धर्मलक्षणम्- धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

आचार्य मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं, 1.धृतिः = धैर्य, 2.क्षमा, 3.दम= अहंकार, 4.अस्तेयं= चोरी न करना, 5.शौचः= पवित्रता, 6.इन्द्रियनिग्रहः= इन्द्रियों पर नियन्त्रण, 7.धीः= बुद्धि, 8.विद्या, 9.सत्य और 10. अक्रोधः= क्रोध न करना। (मनु. 6.92)

6. परोपकारः- **अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।**
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अट्ठारह पुराणों में सार रूप में वेदव्यास जी ने दो वचन कहे, 1. पुण्य के लिए **परोपकार** और 2. पाप के लिए **दूसरों को दुःख देना।**

7. त्यागभावना- यद्यपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

लंका पर विजय पाने के बाद राम ने लक्ष्मण से कहा - हे लक्ष्मण! यद्यपि यह सोने की लंका फिर भी मुझे अच्छी नहीं लगती, क्योंकि माता, और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

स्नेह, दया, मित्रता को और यदि जनकल्याण के लिए मुझे जानकी को भी छोड़ने भी कोई दुःख नहीं होगा।

8. सदाचारः- **आचारः परमोधर्मः ।**

सज्जनों के आचार-विचार को धारण करना ही परम धर्म है।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः॥

वृत्त = ब्रह्मचर्य की रक्षा यत्नपूर्वक करें क्योंकि वित्त = धन तो आता और जाता रहता है, धन न रहने से कोई अक्षीण = मरता नहीं, पर वृत्त के नष्ट होने से जीता हुआ भी मरा है।

9. नारी शक्तिः- **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।**
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ समस्त देवता रमण करते हैं। जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ की सारी क्रियाएँ असफल हैं।

मातृ देवो भव- माता के देवता मानो- (तैत्तिरीयोपनिषद्-1.11.2)

10. उदारता- **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

सभी सुखी होवें, सभी निरोगी होंवे, सभी अच्छा देखें, कभी किसी को किसी प्रकार का दुःख न हो।

11. वर्णव्यवस्था- भारतीय संस्कृतेः समुन्नतौ प्रमुखसूत्रम् - वर्णव्यवस्था आसीत् । जन्मना- जातिः, कर्मणा-वर्णः निर्धारितो भवति। वर्णः श्रेष्ठः, जाति व्यवस्था दूषिता भवति। ब्राह्मण- क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र एते चत्वारो वर्णाः सन्ति।

'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। (गीता- 4/13)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों को गुण और कर्म के अनुसार मेरे द्वारा मनाया गया है।

12. आश्रमव्यवस्था- भारतीय संस्कृतौ चत्वारः आश्रमाः सन्ति। ब्रह्मचर्यम् गृहस्थः, वानप्रस्थः, संन्यासः च।

■ ब्रह्मचर्याश्रमः- जन्मतः 25 वर्ष यावत् ।

कर्त्तव्यम् - विद्याध्ययनम्, स्वाध्यायः, सर्वविध-गुणसंग्रहः च।

■ गृहस्थाश्रमः- 25 वर्षतः 50 वर्ष यावत् ।

कर्त्तव्यम् - वैवाहिकजीवनयापनम्, वंशवृर्ध्यं सन्तानोत्पत्तिः, भौतिक-विषयाणामुपभोगः, सर्वविधसमुन्नतिः च ।

■ वानप्रस्थाश्रमः - 50 तः 75 वर्षपर्यन्तम् ।

कर्तव्यम् - सपत्नीकः ईश्वराराधनम् , संयमः, योगः।

■ संन्यासाश्रमः- गृहस्थाश्रम-पश्चात् यदा वैराग्यभावना उत्पन्ना भवेत् ततः आरभ्य जीवनपर्यन्तम् ।

कर्तव्यम् - भौतिक-विषयाणां त्यागः, योगाभ्यासे रतिः, पुण्यार्जने प्रवृत्तिः, समाधिः, मोक्षप्राप्त्युिपायः, योगः।

जीवन को मनोवैज्ञानिक आधार पर चार आश्रमों में विभाजित किया गया था। हमारी संस्कृति में 100 वर्ष पर्यन्त आयु की प्रार्थना की गई है । आज भी लोग जीते हैं। दीर्घायु का मूलमन्त्र ब्रह्मचर्याश्रम है।

13. कर्मवादः,पुनर्जन्मवादः- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। गीता-2,47
तुम्हारा केवल कर्म करने में अधिकार है। न कि उसके फल प्राप्ति में।

त्रिभिवर्षैः त्रिभिर्मासैः त्रिभिर्पक्षैः त्रिभिर्दिनैः।

अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाऽशुभम्।। (गरुणपुराण-)

व्यक्ति जैसा भी शुभ-अशुभ कर्म करता है उसका फल तीन वर्ष, तीन माह, तीन पक्ष व तीन दिन में अवश्य प्राप्त करता है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च। (गीता-2/27)

जो जन्म लिया मृत्यु भी उसकी सुनिश्चित है, पुनश्च कर्म के अनुसार पुनर्जन्म भी सुनिश्चित है।

14. अहिंसा परमो धर्मः- भारतीय-संस्कृति अहिंसा-दया, प्रेम-शान्ति, उदारता आदि भावनाओं से परिपूर्ण है। सम्राट् अशोक, महात्माबुद्ध, स्वामी महावीर, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों का यह मार्ग है।

15. यज्ञसम्पादनम् - भारतीय संस्कृति में मानवजीवन पर्यन्त पाँच यज्ञ बताये गये हैं। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथि-यज्ञ।

1. ब्रह्मयज्ञः- सन्ध्यावन्दनम् (प्राणायामः, सूर्यनमस्कारः, जपादिकम् च)।

2. देवयज्ञः- दैनिक-होमः।

3. पितृयज्ञः- मातृपितृ-सेवा, आज्ञापालनं च।

4. बलिवैश्यदेवयज्ञः- प्रतिदिनं भोजनात् पूर्वं अग्निः, गौः, श्वान् , कीटादिभ्यः अन्नप्रदानम्।

5. अतिथियज्ञः- ***अतिथि देवो भव*** *(अतिथि को देवता मानो) अतः सेवा, शुश्रूषा, सत्कारादीनाम् आचरणं पालनं च अवश्यमेव करणीयम्।*

इस प्रकार ग्रहणशीलता, दार्शनिकता, मनोवैज्ञानिकता, व्यापकता, तपोमय जीवन, मातृ-पितृ भक्ति, गुरु-राष्ट्रभक्ति, पुरुषार्थ-चतुष्टय आदि विशेषताएँ हैं। इन सभी विशेषताओं का संस्कृत वाङ्मय प्रतिपादन करता है तथा शिक्षा प्रदान करता है। इसलिए कहा गया है-

"**संस्कृतिः संस्कृताश्रिता वर्तते।**" संस्कृति संस्कृत के आश्रित है।

"**भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे - संस्कृतं सांस्कृतिस्तथा**"। इति।।

संस्कृत और संस्कृति ये दोनों भारत की प्रतिष्ठा हैं।

संस्कृतम् नाम दैवीवाकग् अन्वाख्याताः महर्षिभिः

संस्कृत देववाणी है ऐसा महर्षियों ने कहा है।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

तुम्हारे अभिप्रायों, हृदयों तथा मनों में समता की भावना रहनी चाहिए। जिससे तुम्हारी समूह की सामुदायिक शक्ति का विकास हो।

संस्काराणां पावन-परम्परा

संस्कारशब्दस्य व्युत्पत्तिः-

सम् उपसर्गकः, कृञ् धातुः, घञ् प्रत्ययः, सुडागमश्च।

(सम् + सुट् + कृ + घञ् = संस्कारः) शुद्धि, स्वच्छता, परिमार्जितम् इति शब्दार्थः । अर्थः- मानव जीवन को पवित्र, सुन्दर तथा उन्नत बनाने के लिए धार्मिक कृत्यों को संस्कार कहते हैं।)

संस्कार को अंग्रेजी के Ceremony (सिरीमनी) और लैटिन के Caerimonia (सिरीमोनिया) के रूप में जाना जाता है। जिसका अर्थ कर्म अथवा धार्मिक क्रियाएँ है। कुछ लोग अंग्रेजी के सेक्रामेण्ट को संस्कार का उपयुक्त पर्याय मानते हैं- जिसका अर्थ- धार्मिक विधि-विधान जो आन्तरिक तथा आत्मिक सौन्दर्य का बाह्य तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है।

अभिप्रायः- संस्कार- जीवन शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान हैं, जिनसे सुसंस्कृत व्यक्ति समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।

प्रयोजनम् /उद्देश्यम् -

- संस्कार किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अङ्ग हैं।
- संस्कारों का जन्म मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है।
- संस्कार भारतीय समाज के आदर्शों तथा महत्वकांक्षाओं को हस्तान्तरित करने के साधन हैं।
- संस्कारों से व्यक्तित्व के विकास द्वारा मनुष्य का कल्याण और समाज तथा विश्व से उसका सामञ्जस्य स्थापित होता है।
- संस्कार मानव जीवन तथा उसके विकास की क्रमबद्ध योजना है।
- व्यक्तित्व विकास को सुविधा जनक करना।
- मानव देह को पवित्र तथा महत्व प्रदान करना।
- मनुष्य की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक महत्वकांक्षाओं को गति प्रदान करना।

इस प्रकार मनुष्य का जीवन संस्कारों से ही परिशुद्ध होता है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन संस्कारों से आवृत्त रहा है, जो यथा समय कार्यान्वित किए जाते रहे। ये संस्कार अत्यन्त प्राचीन समय से हमारे पारिवारिक जीवन की आधारशिला रहे हैं। जन्म से पूर्व गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों का विधान हमारे शास्त्रों में किया गया है।

1. गर्भाधानम् - 'गर्भः सन्धार्यते येन कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'
जिस कर्म के द्वारा पति-पत्नी में सन्तानोत्पत्ति हेतु संस्कार करता है उसे गर्भाधान संस्कार कहते हैं।

2. पुंसवनम् - 'पुमान् प्रसूयेत येन कर्मणा तत् पुंसवनम्।
जिस कर्म के द्वारा पुरुष का जन्म हो उसे पुंसवन संस्कार कहते हैं। (गर्भ के तीसरे माह में किया जाता है)।

3. सीमन्तोन्नयनम् - 'सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनम्'।
जिस कर्म में गर्भिणी स्त्री के केशों का शृंगार हो (ऊपर उठाना) उसे सीमन्तोन्नयन कहते हैं। यह गर्भ से छठें या 8वें माह में सम्पन्न होता है।

4. जातकर्म- बालक के जन्मोपरान्त उसकी रक्षा व दीर्घायु हेतु यह संस्कार किया जाता है।

5. नामकरणम् - 'नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यः ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म।

नाम अखिल व्यवहार का हेतु है, वह शुभावह कर्मों में भाग्य का हेतु है। नाम से ही मनुष्य कीर्ति प्राप्त् करता है, अतः नाम करण अत्यन्त प्रशस्त है।

-बालकों का नाम 2-4 आदि सम अक्षरों की संख्या होनी चाहिए।

-लड़कियों का नाम सुखकर, स्पष्ट व मंगलसूचक होना चाहिए।

इनके नामाक्षरों के लिए विषम संख्या बताई गई है। अतः 'द्वयक्षरं प्रतिष्ठाकामः चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामः। अर्थात् प्रतिष्ठा अथवा कीर्ति के लिए द्वयक्षर तथा ब्रह्मवर्चस कामना हेतु चार अक्षरों का नाम रखना चाहिए।

- जन्मनक्षत्र आधारित नाम, मासदेवता आधारित नाम, कुलदेवता सूचकं नाम, लौकिक नाम ये चार प्रकार के नाम रखने चाहिए।

- नामकरण जन्म से 10वें या 12हवें दिन सम्पन्न होना चाहिए।

6. निष्क्रमणम् - जन्म के तीन माह बाद जब शिशु बाह्य जलवायु का सहन करने योग्य हो जाता है तब उसे घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं।
इसमें सूर्य देवता से बालक के स्वास्थ्य एवं दृष्टि-शक्ति को पूर्ण बनाए रखने की प्रार्थना की जाती है।

7. अन्न-प्राशनम् - (शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु) जन्म के छः माह बाद दाँत निकलते समय बच्चे को अन्न खिलाने का प्रारम्भ इस संस्कार में किया जाता है। इसमें दही, शहद, घृत, पायस, आदि सुस्वादु भोजन कराया जाता है।

8. चूड़ाकरणम् - (चौलकर्म) शिखा रखने का संस्कार पौष्टिकता, बल, आयु,

पवित्रता और सौन्दर्य की प्राप्ति हेतु जन्म के प्रथम व तीसरे वर्ष की समाप्ति के पूर्व सम्पन्न करना चाहिए। इसे **मुंडन संस्कार** भी कहते हैं। शिखा रखना इसका प्रमुख अङ्ग है।

9. कर्णवेधः - तीसरे व पाँचवें वर्ष में किसी अनुभवी वैद्य या सुनार द्वारा स्वर्ण सूची से इस संस्कार को सम्पन्न कराना चाहिए। 'सुश्रुत' के अनुसार अण्डकोशवृद्धि, अन्त्रवृद्धि आदि। रोगों से रक्षा, भूषण तथा अलंकरण के निमित्त जातक का कर्णछेदन करना चाहिए।

10. विद्यारम्भः - इसे अक्षरारम्भ (अक्षरलेखन) संस्कार भी कहते हैं। यह संस्कार जब बालक का मस्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता था, तब शिक्षा का आरम्भ ही विद्यारम्भ संस्कार है। इसे अक्षरारम्भ, अक्षरलेखन आदि भी कहते हैं।

11. उपनयनम् - (गुरोः समीपे नयनम् - गुरु के समीप ले जाना) शिक्षा से सम्बन्धित यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। इसे वर्णानुसार 5 वर्ष से 14 वर्ष के अन्दर सम्पन्न करने का विधान है। इसके बाद बालक 'द्विज' कहलाता है। इसके बाद ही 'गायत्रीमन्त्र' का अधिकारी तथा वेद शिक्षा का अधिकारी होता है। यह बालक का दूसरा जन्म कहलाता है।

वेदारम्भः- (वेदशिक्षायाः आरम्भः) इस संस्कार के द्वारा बालक चारों वेदों एवं षड़ङ्गों के साङ्गोपाङ्ग अध्ययन हेतु नियम धारण करता है। प्रायः उपनयन के साथ ही इसे किया जाता है। (इस संस्कार को उपनयन के साथ करने की परम्परा रही है।)

12. समावर्तनम् - (दीक्षान्त समारोहः) तत्र समावर्तनं नाम वेदाध्ययनानन्तरं गुरुकुलात् स्वगृह-गमनम् । गुरुकुल में शिक्षा पूर्ण होने पर घर जाने की अनुमति इस संस्कार के बाद ही दी जाती थी। इसके बाद ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश होता था। आजकल शिक्षण संस्थाओं में इसे 'दीक्षान्त समारोह' कहा जाता है।

- गृह्यसूत्र में तीन प्रकार के स्नातकों का वर्णन मिलता है-

1. व्रत-स्नातकः - जो ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण कर ले पर विद्या पूर्ण न हो।

2. विद्या-स्नातकः - जो सम्पूर्ण विद्या तो जाने पर उसका ब्रह्मचर्य खण्डित व अपूर्ण हो।

3. उभय-स्नातकः - जो सम्पूर्ण व्रत तथा विद्या प्राप्त कर चुके हो।

14. विवाहः/पाणिग्रहणम् (गृहस्थाश्रमे प्रवेशः)- स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाह (अष्टविध विवाह) का उल्लेख है-

ब्राह्मो दैवः तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ या.व.1-58

1. ब्राह्म विवाह- विवाह का यह सर्वोत्तम प्रकार है। इसमें माता-पिता कन्या

के लिए सुयोग्य वर का चयन कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा के साथ वस्त्राभूषणों से सज्जित कर कन्या का दान करते हैं।

- वर्तमान समय में भी ब्राह्मविवाह ही सर्वाधिक प्रचलित एवं सर्वोपरि है।

- दान दक्षिणा- अलंकार ने दहेज रूपी कुप्रथा का रूप ले लिया है।

2. दैव विवाह- यज्ञ में आहूत ऋत्विजों में श्रेष्ठ पुरोहित को दक्षिणा रूप में पिता कन्य का दान करता था। अतः देव कार्य हेतु दान देने के कारण इसे देव विवाह कहा जाता है।

3. आर्ष विवाह- इस तृतीय प्रकार में कन्या का पिता वर पक्ष को यज्ञादि धर्म विहित कार्य को सम्पन्न करने के लिए दो गाय के जोड़ों को लेता था।

-ऋग्वेद के अनुसार जब विस्तृत ज्ञान तथा आध्यात्मिक योग्यता के कारण किसी ऋषि के साथ कन्या विवाह **आर्ष विवाह** कहलाता था।

4. प्राजापत्य - समान योग्यता वाले वर कन्या का विवाह जब प्रजापति के प्रति अपना ऋण चुकाने के उद्देश्य से किया जाता था तो इसे 'प्राजापत्य विवाह' कहते थे।

5. असुर- जिस विवाह में धन ही निर्णायक तत्व हो। जिस विवाह में कन्या के माता-पिता व सम्बन्धियों को धन देकर कन्या प्राप्त की जाय उसे असुर विवाह कहते हैं।

6. गान्धर्व- (प्रेम विवाह) जिस विवाह में वर-कन्या कामुकता ऐश्वर्य आदि के वशीभूत होकर पारस्परिक सम्मति से विवाह करते हैं उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं।

7. राक्षस- वर जब कन्या पक्ष पर बल प्रभाव से कन्या प्राप्त कर विवाह करता है, तो उसे राक्षस विवाह कहते हैं।

8. पैशाच- जब छल-कपट के द्वारा कन्या से विवाह करे उसे पैशाच विवाह कहते हैं। जो अष्टविध विवाह में सबसे निकृष्ट माना गया है।

15. वानप्रस्थाश्रम- जीवन की तीसरी अवस्था में यह संस्कार होता है।

15. संन्यासाश्रम- यह संस्कार जीवन के चतुर्थ अवस्था में होता है, अर्थात् जब वैराग्य उत्पन्न हो जाय, विश्वकल्याणार्थ इसे सम्पन्न कराया जाता है।

16. अन्त्येष्टि- भारतीय जीवन परम्परा का यह अन्तिम संस्कार है। इसे मृत्यु पश्चात् सर्वविध शान्ति के लिए किया जाता है। इससे पितरों की प्रसन्नता तथा अपना अभ्युदय होता है।

आरम्भिक 15 संस्कार जीवन पर्यन्त इस लोक में यश और कीर्तिप्रद होते हैं तथा 16वां संस्कार परलोक को सुखद करता है।

(सोलहों संस्कार मनुस्मृति, आश्वलायन गृह्यसूत्र, वीरमित्रोदय, संस्कार प्रकाश के अनुसार बताए गए हैं।)

संस्कृतम्

सम् उपसर्गकः कृञ् धातुः क्त प्रत्ययः सुट् आगमः प्रथमा-विभक्ति-एकवचने संस्कृतम् (सम् + सुट् + कृ + क्त + सु = संस्कृतम्) ।

संस्कृतशब्दार्थः- परिष्कृतं, शुद्धम् , व्याकरणादि-दोषरहितम् ।

संस्कृतस्य अपरं नाम - अमरवाणी, देववाणी, सुरभारती, दैवीवाक्, गीर्वाणवाणी, ।

संस्कृत भाषायाः विशेषताः -

- देवसंस्कृतेः (भारतीयसंस्कृतेः) संरक्षिका।
- देव-ऋषि-मुनीनाम् ज्ञानोपदेश-साधिका ।
- भारतीय-वैभव-ज्ञानविज्ञान-बोधिका ।
- सम्पूर्ण-समाजस्य सर्वविध-हितकारिणी।
- कर्त्तव्य-अकर्तव्य बोधिनी।
- इहलोक-परलोकहित-सम्पादिका।
- विश्वगुरुता-समरसता-एकतादि साधिका।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥ (महा. आदि 62-53)

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चतुर्विध पुरूषार्थों से सम्बन्धित जो भी ज्ञान विज्ञान यहाँ है वही अन्यत्र है। जो यहाँ नहीं है, वह कहीं और भी नहीं।

संस्कृतस्य विशालता (वेदोऽखिलोधर्ममूलम्)

वेदस्वरूप-बोधकचक्रम्

चत्वारः वेदाः	ऋग्वेदः	यजुर्वेदः	सामवेदः	अथर्ववेदः
चत्वारः उपवेदाः	आयुर्वेदः	धनुर्वेदः	गान्धर्ववेदः	स्थापत्यवेदः
चत्वारः ऋत्विजः	होता	अध्वर्युः	उद्गाता	ब्रह्मा
चत्वारः देवताः	अग्निः	वायुः	सूर्यः	सोमः
चत्वारः ऋषयः	पैलः	वैशम्पायनः	जैमिनिः	अथर्वा, सुमन्तुः
चत्वारः उपनिषदः	ऐतरेयः	ईशः, कठः, बृहदारण्यकः	प्रश्नः, मुण्डकः	छान्दोग्यः, केनः माण्डूक्यः
ब्राह्मण-ग्रन्थाः	ऐतरेयः	**शतपथ ब्राह्मण**	**पंचविंशः, षड्विंशः**	गोपथः

वेदानां सामान्यः परिचयः

1. वेदः- 'विद्' ज्ञाने धातोः रूपम् अस्ति- वेदः।

वेदशब्दार्थ- ज्ञानम् (ज्ञानराशिः) "वेदो नाम वेद्यन्ते=ज्ञाप्यन्ते धर्म-अर्थ-काम-

मोक्षाः अनेन इति। अर्थात् धर्म,अर्थ,काम, और मोक्ष विषयक सम्यक ज्ञान प्राप्ति के लिए साधनभूत ग्रन्थ विशेष को वेद कहते हैं ।

***वेदभागाः:-** मन्त्र-ब्राह्मण-उपनिषद् च।

***मन्त्रः-** चिन्तन-मननपूर्वकं देवतानां स्तुतिः - मन्त्रः कथ्यते।

***ब्राह्मणम् -** अत्र विविध-कामना-परक-कार्याणां सिध्यथर्म् उपायाः सन्ति।

***उपनिषद् -** अध्यात्मविषयकं महत्वपूर्णं विवेचनम् ।

***ऋत्विज् -** यज्ञकर्त्ता

***होता -** यः यज्ञकर्त्ता देव-प्रशंसापरक मन्त्रद्वारा देवातानाम् आवाहनं करोति सः होता।

***अध्वर्युः -** यः यज्ञविषयकं सम्पूर्णकर्माणि विधिपूर्वकं सम्पादयति सः अध्वर्युः।

***उद्गाता -** यः सस्वर-मन्त्रगानं करोति सः उद्गाता।

***ब्रह्मा -** यः सम्यक्रूपेण समग्रं यज्ञकर्म निरीक्षते सः ब्रह्मा।

ऋग्वेदः

***ऋग्वेदे छन्दोबद्ध-** ऋचानां (मन्त्राणाम्) संग्रहः अस्ति ।

***ऋग्वेदे मण्डलानां संख्या अस्ति-** दश

***ऋग्वेदे मन्त्राः सन्ति -** 10580

***ऋग्वेदे अस्ति -** इन्द्र-अग्नि-मित्र-वरुण-सविता-रुद्र-बृहस्पति आदि देवानां स्तुतिः।

***ऋग्वेदः अस्ति-** ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-मूल्यानां स्रोतः।

यजुर्वेदः

***यजुर्वेदे गद्यात्मक-** मन्त्रसंग्रहः अस्ति।

***गद्य-पद्यात्मकः वेदः अस्ति-** यजुर्वेदः

***यजुर्वेदस्य भागद्वयम् अस्ति-** शुक्ल यजुर्वेदः, कृष्णयजुर्वेदः

***संहिता-** माध्यन्दिनी काण्वः

***अध्यायः-** 40(चत्वारिंशत्)

***यजुर्वेदस्य प्रतिपाद्य-विषयः-** कर्मकाण्डः

सामवेदः

सामवेदस्य महत्ता भगवान् श्रीकृष्णः श्रीमद्भागवद्गीतायाम् उवाच-

'वेदानां सामवेदोऽस्मि'-वेदों में मैं सामवेद हूँ।

गानप्रधानं वेदः - सामवेदः

1000 सहस्र शाखा सन्ति अतः 'सहस्रवर्त्मा' कथ्यते।

सङ्गीत-आधारभूताः प्रमुखाः स्वराः- सप्तस्वराः

सामवेदस्य मुख्यतया प्रतिपद्यविषयः- संगीतम्

सामगानं पञ्चधा भवति- प्रस्तावः, उद्गीथः, प्रतिहारः, उपद्रवः, निधनञ्च।

अथर्ववेदः

अथर्ववेदस्य अन्य नामानि- अथर्वाङ्गिरोवेदः, ब्रह्मवेदः, भिषग्वेदः, क्षत्रवेदः, छन्दोवेदः।

प्रतिपाद्यविषयाः- ब्रह्मविषयकदार्शनिक-सिद्धान्ताः, राजनीति-प्रायश्चित-भैषज्य-कर्मशान्तिक-पौष्टिककर्म-आयुष्यकर्म-अभिचार कर्म, कृषिकर्म अथवा जल-सूर्यकिरण- मानसिक-चिकित्सा आदि।

वेदाङ्गानि

वेदः = ज्ञानम्, अङ्गम् = स्वरूपबोधनम् (जो स्वरूप का बोध कराने में उपयोगी हों)

वेदाङ्गानि सन्ति- षट्

शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरूक्तं, छन्दः, ज्योतिषम् । वेदरूपी भगवतः शरीरस्य एतानि षट् अङ्गानि सन्ति ।

1. छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुः, निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा-घ्रांण तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव, ब्रह्मलोके महीयते।।

वेदाङ्ग वेदरूपी पुरुष के छः अङ्ग हैं- छन्द- पैर, कल्प- दोनों हाथ, ज्योतिष- नेत्र, निरुक्त- कान, शिक्षा- नासिका और व्याकरण को मुख बताया है, जिनके अध्ययन से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

वेदाङ्गपरिचयः

1. शिक्षा- 'स्वरवर्णादि उच्चारण-प्रकारः यत्र शिक्ष्यते सा शिक्षा'। जहाँ स्वर-वर्णादिकों के उच्चारण विधियों का ज्ञान किया जाता है उसे शिक्षा कहते हैं।

शिक्षाग्रन्थाः - याज्ञवल्क्य-शिक्षा, पाणिनीय-शिक्षा, नारदीय-शिक्षा, कात्यायनी- शिक्षा, पाराशरी-शिक्षा आदि।

2. कल्पः- 'वेदविहितानां कर्मणाम् आनुपूर्वेण कल्पनाशास्त्रम् कल्पः'। वेद प्रतिपादित कर्मों को क्रमपूर्वक व्यवस्थित करने वाले शास्त्र को 'कल्पसूत्र' कहते हैं।

कल्पसूत्रग्रन्थाः-श्रौतसूत्रम् - विविध प्रकार की अग्नि का वर्णन।

गृह्यसूत्रम् - संस्कारों का निरूपण।

धर्मसूत्रम् - वर्ण-आश्रम-धर्म-आचार आदि का वर्णन।

शुल्बसूत्रम् - ज्यामितीय प्रक्रिया व अन्य गणितीय प्रक्रिया का निरूपण।

3. व्याकरण- 'व्याक्रियन्ते = व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्' । जिससे पद, प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन पूर्वक उनके अर्थ का ज्ञान हो उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण का उद्भव भगवान् ब्रह्मा से माना जाता है। व्याकरण शास्त्र के प्रथम वक्ता ब्रह्मा, द्वितीय देवगुरु बृहस्पति, संस्कर्त्ता- देवराज इन्द्र को माना जाता है। महर्षि पाणिनि से पूर्व एवं पश्चात् के कुल 85 प्राचीन व्याकरणाचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

यद्यपि ऐन्द्र, चान्द्र आदि आठ व्याकरण ग्रन्थ पाणिनीय व्याकरण से पूर्ववर्ती है, तथापि अधिक लोकप्रिय एवं सर्वाङ्गपूर्ण होने के कारण पाणिनीय व्याकरण ही व्याकरण का प्रतिनिधि ग्रन्थ माना जाता है। **ग्रन्थः-अष्टाध्यायी, रचयिता- महर्षिःपाणिनिः।**

4. **निरुक्तम्** - **'अर्थावबोधे निरपेक्षता पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'** । अर्थ ज्ञान में बिना किसी उपेक्षा से पदों की व्युत्पत्ति जहाँ कही गई है उसे निरुक्त कहते हैं। इसे वेद का कोषग्रन्थ भी कहा जाता है। **निरूक्त प्रणेता आचार्य यास्कः** है।

5. **छन्दःशास्त्रम्** - वेद छन्दोमय हैं, अतः वेदमन्त्रों के उच्चारण के लिए छन्दः शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। **छन्दः सूत्रम् , रचयिता - आचार्य पिङ्गलः**

6. **ज्यौतिषम्** - (प्रत्यक्षशास्त्रम्) **'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ'**। ज्योतिष शास्त्र प्रत्यक्ष है, चन्द्र और सूर्य इसके साक्षी हैं।

यज्ञ यागादि के लिए समुचित समय निरूपक शास्त्र को ज्योतिष कहते हैं। **ज्योतिषशास्त्रप्रणेता- आचार्यःलगधमुनिः**।

उपनिषदः

ईश-केन कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
ऐतरेयं छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥

ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद् , कठोपनिषद् , प्रश्नोपनिषद् , मुण्डकोपनिषद् , तैत्तिरीयोपनिषद् , ऐतरेयोपनिषद् , छान्दोग्योपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद् , माण्डूक्योपनिषद्

श्रीशंकराचार्य ने इन दस उपनिषदों को गिनाया है। वेद के अन्तिम भाग होने के कारण उपनिषद को वेदान्त भी कहते हैं।

महावाक्यानि-

अहं ब्रह्मास्मि - मैं ब्रह्म हूँ। छान्दो. 1/4/10

अयमात्मब्रह्म- यह आत्मा ब्रह्म है। बृहदा. 2/5/19

ॐकार एवेदं सर्वम् - यह सब कुछ ॐकार ही है। छान्दो. 2/23/3

तत्त्वमसि- तुम वही हो (अर्थात् जीवात्मा ब्रह्म ही है) छान्दो. 6/8/7

सर्वं खल्विदं ब्रह्म- निश्चित रूप से यह सब कुछ ब्रह्म ही है। छान्दो. 3/14/11

दीर्घायु प्रदायकः त्र्यम्बकमन्त्रः

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

हम लोग उस भगवान शिव की उपासना करते हैं, वे हमारे जीवन में सुगन्धि (यश, सदाशयता) एवं पुष्टि (शक्ति, समर्थता) का प्रत्यक्ष बोध कराने वाले हैं। जिस प्रकार पका हुआ फल ककड़ी, खरबूजा आदि स्वयं डंठल से अलग हो जाता हैं, उसी प्रकार हम मृत्युभय से सहज मुक्त हों किन्तु अमृतत्व से दूर न हों।

चातुर्वेद-पन्थानमनुचरेम
(चारों वेदों के मार्गका हम अनुसरण करें)

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा- सम्पूर्ण विश्व का एक मात्र स्वामी है। ऋग्वेदः-6/36/4

सं गच्छध्वं सं वदध्वम्- मिलकर चलो और मिलकर बोलो। ऋग्वेदः-10/19/12

स्वस्ति पन्थामनु चरेम- हम कल्याण-मार्ग के पथिक हों। ऋग्वेदः-5/51/15

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामेह- हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। यजुर्वेदः-36/18

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम- हम कानों से मंगलकारी वचन ही सुनें। यजुर्वेदः-25/21

वयं स्याम सुमतौ- हमें सद्बुद्धि प्रदान करो। यजुर्वेदः-11/21

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्- इस गांव में सभी लोग रोग रहित और हृष्ट-पुष्ट हों। यजुर्वेदः-16/48

मा गृधः कस्य स्विद्धनम्- पराये धन का लालच न करो। यजुर्वेदः-40/01

यज्ञस्य ज्योतिः प्रियं मधु पवते- यज्ञ की ज्योति प्रिय और मधुर भाव उत्पन्न करती है। सामवेदः-1031

सं श्रुतेन गमेमहि- हम वेदोपदेश से युक्त हों। अथर्ववेदः-01/01/04

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युम् आघ्नत- ब्रह्मचर्य रूपी तपोबल से ही विद्वानों ने मृत्यु को जीता है। अथर्ववेदः-11/05/19

मधुमतीं वाचम् उदेयम्- मैं मीठी वाणी बोलूँ। अथर्ववेदः-16/02/02

सर्वमेव शमस्तु नः- हमारे लिए सब कुछ कल्याणकारी हो। अथर्ववेदः-19/09/14

संस्करोति संस्कृतभाषा

संस्कृतभाषायाः इदं महत्वमेव यत् भारतस्य विशिष्टासु संस्थासु, समितिषु, संघेषु व प्रेरकानि आदर्शवाक्यानि संस्कृतभाषायामेव सन्ति। तद्यथा-

सत्यमेव जयते	भारत-सर्वकारः
धर्मचक्र-प्रवर्तनाय	लोकसभा
यतोधर्मः ततो जयः	सर्वोच्च-न्यायालयः
भारतीय थल सेना	सेवा अस्माकं धर्मः
नभः स्पृशं दीप्तम्	भारतीय वायुसेना
शं नो वरुणः	भारतीय नौ सेना
ह्वयामि भर्गः सवितुर्वरेण्यम्	,, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

आदिकाव्यम् रामायणम्

'रामायण' महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित लौकिक संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य है। आदि माने पहला। अतः महर्षि बाल्मीकि को आदि कवि कहा जाता है। क्योंकि लौकिक संस्कृत की छन्दोमयी वाणी में सबसे पहले काव्य उन्होंने ही लिखा था। इस महाकाव्य में रामकथा वर्णित है। जिस कथा को सर्वप्रथम महर्षि बाल्मीकि ने रघुकुलभूषण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव और कुश को सुनाया तथा पढ़ाया था। उन पुत्रों ने वीणा के स्वरों में इसका गान किया और अयोध्या नरेश श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर राजा सहित सभी प्रजा जनों को सुनाया।

रामायण नामक महाकाव्य में कुल 24 हजार श्लोक हैं। इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। 24 हजार श्लोक सप्त काण्डों में विभाजित हैं। वे काण्ड हैं- क्रमशः- बालकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्डः, सुन्दरकाण्डः, युद्धकाण्डः, (लंकाकाण्डः) उत्तरकाण्डः।

लौकिकसंस्कृतसाहित्य का प्रथम श्लोक

एक बार आदि कवि महामुनि बाल्मीकि ने प्रातःकाल तमसा नदी के तट पर क्रौञ्चपक्षी के एक जोड़े को खेलते हुए देखा। तभी सहसा एक व्याध ने बाण से नर पक्षी को मार दिया। मादा असहाय बेवस हो करुण क्रन्दन करने लगी। निरीह, निर्दोष उस पक्षी की पीड़ा से बाल्मीकि मुनि का गला भर आया, और करुणा से पूरित कण्ठ से छन्दोमयी वाणी निःश्रित हो पड़ी-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्च मिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम् ॥

हे व्याध! (बहेलिये) तुमने काममोहित युगल क्रौञ्च पक्षी में से एक को मारा अतः तुम दीर्घकाल तक प्रतिष्ठा को मत प्राप्त हो। (बा.रा. बा.का.- 2/15)

विश्व को कवितामयी भाषा का यह प्रथम वरदान था। जिसे ब्रह्माजी सुनकर अवाक रह गए। उसी समय महामुनि के पास आकर बोले-

"हे महामुनि! वाणी आपके वश में हो गई है। शब्द आप को सिद्ध हो गये हैं। आपकी तपस्या धन्य है। आपने तीनों लोकों का हित किया है। अब आप इस छन्दोमयी वाणी में इक्ष्वाकुवंश के प्रतापी राजा दशरथ के पुत्र राम की कथा कहें। जगत् में आदि कवि के नाम से आप की प्रसिद्धि होगी"।

इस प्रकार एक पक्षी की शोक से सन्तप्त, मन लोकहित में रामकथा 'रामायण' की रचना में कारण बना। जो धर्म, प्रेम, भक्ति, मर्यादा, सम्बन्ध, साहित्य, कला, संस्कृति और इतिहास का साक्षात् विग्रह है।

महाभारतम्

'महाभारत' नामक महाकाव्य को महर्षि वेदव्यास ने देवभूमि उत्तराखण्ड के बदरिकाश्रम में लिखा। अतः उन्हें महर्षि बादरायण भी कहा जाता है। महाभारत में एक लाख श्लोक हैं। अतः इसे 'शत-साहस्त्री संहिता' भी कहा जाता है। 18 पर्वों में विभक्त इस महाकाव्य में कौरव-पाण्डवों की उत्पत्ति से लेकर पाण्डवों की स्वर्ग प्राप्ति पर्यन्त वर्णन है। यह विश्व का एक विशाल ऐतिहासिक महाकाव्य है।

नामकरण-

जयसंहिता- सर्वप्रथम कौरवों पर पाण्डवों की विजय गाथा लिखी गयी जिसका नाम 'जय संहिता' था। महर्षि वेदव्यास इसके वक्ता तथा भगवान गणेश को लेखक माना जाता है। जिसमें 88000 श्लोक थे। इसे महर्षि वेदव्यास के शिष्य वैशम्पायन ऋषि ने राजा परीक्षित पुत्र जनमेजय के सर्पयज्ञ में प्रथम बार सुनाया था ।

महाभारत- जय संहिता को दूसरी बार नैमिषारण्य में शौनक ऋषि के यज्ञ में श्री सूत जी (लोमहर्षणपुत्र उग्रश्रवा) ने सुनाई थी। 12 वर्षों तक चले महायज्ञ में ारतवंश की भी कथा थी। इसमें विभिन्न आख्यान, उपाख्यान प्रश्नोत्तर, शंकासमाधान होने के कारण इसका नाम महाभारत पड़ा। (सूत-शौनक-सौति आदि ने भी सुनाया है।)

अष्टादश पर्वाणि

1. आदिपर्व	2. सभापर्व	3. वनपर्व
4. विराटपर्व	5. उद्योग पर्व	6. भीष्म पर्व
7. द्रोणपर्व	8. कर्णपर्व	9. शल्यपर्व
10. सौसुप्ति	11. स्त्री पर्व	12. शान्तिपर्व
13. अनुशासनिक पर्व	14. अश्वमेध पर्व	15. आश्रम पर्व
16. मुसल पर्व	17. महाप्रस्थानिक पर्व	18. स्वर्गारोहण पर्व

विशिष्ट उपाख्यानानि

नलोपाख्यानम् - नल-दमयन्ती विषयकं वर्णनम्

शकुन्तलोपाख्यानम् - दुष्यन्त-शकुन्तलाविषयकं वर्णनम्

परीक्षितोपाख्यानम् - राजा परीक्षितवर्णनम्

दुर्वासोपाख्यानम् - दुर्वासा द्वारा शापादि वर्णनम्

रामायण एवं महाभारत बाद के कालिदास, भवभूति, तुलसीदास आदि कवियों की कविता के आधार रहे । **कालिदास-** अभिज्ञान शाकुन्तलम् , **श्रीहर्ष-** नैषधीयचरितम्, **भारवि-** किरातार्जुनीयम् आदि की रचना की।

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। जिसमें भीष्मपर्व के 23 अध्याय से लेकर 40वें तक कुल 18 अध्याय सम्मिलित हैं। गीता सम्पूर्ण मानव जीवन की झांकी प्रस्तुत करती है अतः इसे हिन्दू धर्म ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया गया है ।

गीता में अट्ठारह अध्याय हैं जिसे **'अष्टदशाध्यायी'** भी कहते हैं। इसमें कुल 700 श्लोक हैं। 18 दिनों तक चले महाभारत के धर्मयुद्ध कुरुक्षेत्र में अर्जुन के रथ के सारथी भगवान् श्रीकृष्ण ने युद्ध से विमुख हुए अर्जुन को अट्ठारह दिनों में जिस उपदेश को दिया वही गीता है। इसे उपनिषदों का सार भी कहा जाता है। इस युद्ध और उपदेश को भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा प्राप्त दिव्यचक्षु से सञ्जय और बर्वरीक ने भी देखा।

गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः

गीता में वर्णित विषय के अनुसार अध्याय विभाजन-

प्रथमोऽध्यायः-	अर्जुनविषादयोगः	द्वितीयोऽध्यायः-	सांख्ययोगः
तृतीयोऽध्यायः-	कर्मयोगः	चतुर्थोऽध्यायः-	ज्ञानकर्मसन्यासयोगः,
पञ्चमोऽध्यायः-	कर्मसंन्यासयोगः	षष्ठोऽध्यायः-	आत्मसंयम योगः,
सप्तमोअध्यायः-	ज्ञानविज्ञानयोगः	अष्टमोध्यायः-	अक्षरब्रह्मयोगः,
नवमोऽध्यायः-	राजविद्याराजगुह्ययोगः	दशमोऽध्यायः-	विभूतियोगः,
एकादशोऽध्यायः-	विश्वरूपदर्शनयोगः	द्वादशोऽध्यायः-	भक्तियोगः,
त्रयोदशोऽध्यायः-	क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागः	चतुर्दशोऽध्यायः-	गुणत्रयविभागयोगः,
पंचदशोऽध्यायः-	पुरुषोत्तमयोगः	षोडशोऽध्यायः-	दैवासुरसम्पद् योगः,
सप्तदशोऽध्यायः-	श्रद्धात्रययेगः	अष्टादशोऽध्यायः-	मोक्षसंन्यासयोगः।

गीताऽमृतम्

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। गीता-2.47

तुम्हारा अधिकार कर्म करने में ही है न कि फलों में कभी।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय।

सिद्धयसिद्धयो समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥ गीता-2.42

हे धनञ्जय! तुम आसक्ति (आलस्य) को त्यागकर लाभ और हानि में समान बुद्धि वाला होकर एकाग्रचित्त होकर कर्म करो यही समत्व योग कहलाता है।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् । गीता-2.50

इसलिए समत्व योग में लग जाओ, यही योग कर्मों में कुशलता है।

यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।

स यत् प्रमाणं कुरुते लोकः तदनुवर्तते॥ गीता- 2/21

श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करते हैं, अन्य लोग भी वैसा ही करते हैं। यह जो प्रमाण (साक्ष्य) प्रस्तुत करता है उसी के अनुसार लोग करने लग जाते हैं।

पुराणम्

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैवं पुराणं पञ्च लक्षणम् ॥

1. सृष्ट्युत्पत्तिः 2. सृष्टिसंहारः 3. वंशवर्णनम् 4. मन्वन्तरः (मनुष्यों की कालावधि) 5. वंशानुचरितम् (सूर्य-चन्द्र आदि वंशों का इतिहास।

इन पांच लक्षणों से युक्त विषय, स्तुति, उपवास, उत्सव, पर्व एवं तीर्थ आदि के अत्यन्त विस्तृत विवरण ग्रन्थ को पुराण कहा जाता है।

महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित अट्ठारह पुराण-

मद्वयं भ-द्वयं चैव ब-त्रयं व-चतुष्टयम् ।
अ-ना-प-लिङ्ग-कू-स्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥

मद्वयं= मत्स्यपुराणम्, मार्कण्डेय पुराणम्।
भ-द्वयं= भागवत-महापुराणम्, भविष्यपुराणम् ।
ब-त्रयं= ब्रह्माण्डपुराणम्, ब्रह्मपुराणम्, ब्रह्मवैवर्तपुराणम् ।
व-चतुष्टयम्= वायुपुराणम्, विष्णुपुराणम्, वराहपुराणम्, वामपुराणम्।
अ= अग्निपुराणम्, **ना=** नारदपुराणम्, **प=** पद्मपुराणम्।
लिङ्ग= लिङ्गपुराणम्, **ग=** गरुड़पुराणम् **कू=** कूर्मपुराणम्
स्क= स्कन्दपुराणम् ।
उपपुराणानां संख्या- अष्टादश (18)

भारतीय-सम्वत्

सम्वत्	संस्थापकः	तिथिः
महावीर सम्वत्	स्वामी महावीर जैनः	599ईसापूर्वम्
विक्रम सम्वत् (मालवासम्वत् / कृत् सम्वत्)	विक्रमादित्यः	58 ई0
शक सम्वत्	कनिष्कः	78 ई0
गुप्त सम्वत् (बल्लभी सम्वत्)	चन्द्रगुप्त प्रथमः	319 ई0
हर्ष सम्वत्	वर्धनवंशीयः हर्षः	606 ई0
इलाही सम्वत्	मुगलशासकः अकबरः	
हिजरी सम्वत्	हजरत मो0 साहब	622 ई0

ऋषिमुनिपरम्परा

भारद्वाजः- भारद्वाज ऋषि के पिता महर्षि अत्रि तथा गुरु महर्षि बाल्मीकि थे। तीर्थराज प्रयाग इनकी तपस्थली थी आज भी वहाँ भारद्वाज आश्रम है। श्रीरामचन्द्र जी वनगमन के समय सर्वप्रथम ऋषि भारद्वाज के आश्रम गये थे।

याज्ञवल्क्यः- याज्ञवल्क्य ऋषि मुनि वैशम्पायन के शिष्य थे। ये राजा जनक के दरबार में रहते थे। महाविदुषी मैत्रेयी और कात्यायनी इनकी पुत्रियां थीं। इनकी प्रसिद्ध टीका मिताक्षरा एवं याज्ञवल्क्य स्मृति तथा शिक्षा ग्रन्थ हैं।

वशिष्ठः- महर्षि वशिष्ठ का जन्म ब्रह्मा जी की प्राणशक्ति से हुआ, ऐसा माना जाता है । इनकी पत्नी का नाम अरुन्धती था। जिन्हें लोकमाता या ऊर्जाशक्तिरूपा माना जाता है। इक्ष्वाकु वंशीय दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम आदि राजाओं के कुलगुरु थे। इनकी रचना 'योगवासिष्ठ' है।

पाणिनिः- महर्षि पाणिनि एक महान वैयाकरण थे। इनकी रचना अष्टाध्यायी विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ है। अष्टाध्यायी की वैज्ञानिक शैली के कारण विद्वान इन्हें महासंगणक (Super Computer) कहते हैं। इसी शैली के कारण वैज्ञानिकों ने संस्कृत को संगणक (Computer) के लिए सरल भाषा माना है । पाणिनि के माता का नाम दाक्षी एवं पिता का नाम पणिन था। एतदर्थ इनका नाम पाणिनि एवं दाक्षीपुत्र पडा। शालातुर इनका जन्म स्थान था। जो इस समय अफगानिस्थान मे लहुर ग्राम है। आज भी वहाँ महर्षि पाणिनि एवं उनके ग्रन्थ के प्रति वहाँ के लागों में श्रद्धा है। तथा इनकी प्रतिमा वहाँ विराजमान है, ऐसा ऐतिहासिकों का कथन है। महर्षि पाणिनि के गुरु का नाम आचार्य उपवर्ष था, जो नालन्दा विश्वविद्यालय में आचार्य थे। महामुनि पाणिनी भगवान शिव को तपस्या से प्रसन्न कर चौदह सूत्र प्राप्त किए। जो भगवान शंकर द्वारा नृत्त के समय ढक्का (डमरू) से निकले। इन्हीं चतुर्दश सूत्रों को आधार मानकर लगभग चार हजार सूत्रों की रचना की, ये सूत्र 8 अध्यायों (प्रत्येक में 4 पाद) में विभक्त है अतः इसे **'अष्टाध्यायी'** कहते हैं। इस प्रकार इन्होंने व्याकरण के पठन-पाठन परम्परा को वैज्ञानिक प्रकार दिया। जिस वैज्ञानिकता से आज पूरा विश्व संस्कृत व्याकरण से आकृष्ट है।

चतुर्दश माहेश्वर-सूत्राणि-

1.अइउण्, 2.ऋऌक् 3.एओङ्, 4.ऐऔच्, 5. हयवरट्, 6.लण्, 7.ञमङणनम्, 8.झभञ्, 9.घढधष्, 10.जबगडदश्, 11.खफछठथचटतव्, 12.कपय्, 13.शषसर्, 14.हल् ।

3. श्रुति (वेद-उपनिषद् आदि) स्मृति-पुराणादि मूल-ग्रन्थों में आदर भाव रखना।
4. मनु-व्यास-वाल्मीकि-पतञ्जलि आदि अभिनवगुप्त आदि दर्शनकारों, बुद्ध-महावीर आदि नीति-विचारकों, शंकर-रामानुजादि सम्प्रदाय-प्रवर्तकों, ज्ञानदेव, तुलसीदास आदि सन्तों के वचनों के प्रति मातृवत्, आदर, अनुशीलन, अनुसरण तथा यथा-सम्भव परिवर्धन करने का प्रयास करना।
5. मूर्तिपूजा, एक-ईश्वरवाद अनेक-ईश्वरवाद अध्यात्म, उपासना पर सर्वज्ञान करना।
6. सर्वधम्र समादर एवं समभाव रखना अर्थात् समय-समय पर विभिन्न सन्त-महात्माओं, पैगम्बरों द्वारा प्रचारित विभिन्न मानव-समूहों के स्वीकृत वैदिक, भागवत, जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, इसाई और इस्लाम आदि विश्व में प्रचलित धर्मों, पन्थों के प्रति पूज्यभाव रखना।
7. पुनर्जन्म, मुक्ति, मोक्ष, आदि की अभिलाषा रखना।
8. आत्मवत् सर्वभूतेषु- अपने अनुकूल सुख-दुःख को अन्यों के प्रति व्यवहार करना।
9. सबको जीवन जीने का समान अधिकार है को मानना इसके लिए दूसरे के जीवन पर आक्रमण, हिंसा, ईर्ष्या, वैमनस्य से दूर रहना, सोचना भी पाप मानना।
10. श्रीमद्भगवद्गीता में पूज्यभाव रखना, यद्यपि ग्रन्थ केवल हृदय (चित्त) शुद्धि के लिए होते हैं, किसी का रामायण पढ़ने से, किसी का पुराण पढ़ने से किसी का अन्य आर्षकाव्य पढ़ने से भी वही अनुभूति होती है। तथापि श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दु जन-मन समादृत ग्रन्थ है। अनेक ग्रन्थ, पन्थ, विचार आज हिन्दु धर्म से जुड़कर विश्वविश्रुत है। ईश्वर ही धर्म है और जीव उसका सेवक।

इस प्रकार हिन्दु-धर्म किसी व्यक्ति, स्थान, ग्रन्थ, से जुड़ा नहीं है, अतः इसे ग्रन्थ, पन्थ, सम्प्रदाय विशेष से मापना भी उचित नहीं है। यह तो स्वभावतः मानवधर्म है। आस्तिक, नास्तिक, सगुण, निर्गुण, द्वैत-अद्वैत, सर्वरूप है सर्व-संग्रही, सर्वव्यापक धर्म हिन्दु धर्म है। संसार की तरह सब आकर यहाँ मिल जाते हैं।

जानने योग्य कुछ सामान्यज्ञान-

1-वैदिक काल क्या माना जाता है? **-1500 ई.पू. 1000 ई.पू.**

2-आर्यों की आरम्भिक इतिहास का स्रोत क्या है? **-ऋग्वेद**

3-ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक पवित्र नदी है? **-सरस्वती, (नदीतमा)**

4-ऋग्वैदिक काल की महत्त्वपूर्ण नदी **-सिन्धु, गंगा, यमुना, विपाशा (व्यास)**

5-ऋग्वैदिक काल में आर्यों के निवास का स्थल था? **-सप्त सैन्धव**

6-ऋग्वैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप था **-संयुक्त एवं वर्ण व्यवस्था**

7-ऋग्वेद में वर्ण का क्या अर्थ है? **-रंग अथवा व्यवसाय चयन**

8-पत्नी को क्या कहा या माना जाता था? **-अर्धांगिनी**

9-ऋग्वैदिक प्रमुख स्त्री विदुषियाँ कौन-कौन सी थी? **-लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला एवं विश्ववारा**

10-ऋग्वैदिक शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप था **-गुरुकुल पद्धति**

11-ऋग्वैदिक काल में किसे अघन्या कहा गया है? **-गाय**

12-किस काल में भूमि को निजी सम्पत्ति नहीं मानते थे? **-ऋग्वैदिक**

13-ऋग्वैदिक काल में सभी देवता किस रूप में पूजे जाते थे? **-प्रकृति**

14-प्रकृति देवता कौन-कौन थे? **-आकाश देवता (सूर्य, वरुण, विष्णु, आदित्य, उषा, आदि) अन्तरिक्ष देवता- इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु, पर्यजन्य। पृथिवी के देवता- अग्नि, पृथिवी, बृहस्पति, सरस्वती आदि)**

15-ऋग्वेद में महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र को क्या कहा है? **-पुरन्दर**

16-भारत में आर्यों के निवास क्षेत्र को क्या कहा जाता है? **-सप्तसैन्धव**

17-उत्तरवैदिक काल की मुख्य रचना कौन थी? **-वेदविभाग (ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि की रचना हुयी)।**

18-उत्तरवैदिक काल में सर्वाधिक विकसित राज्य था **-पांचाल**

19-राजसूय यज्ञ क्या था? **-राजा का राज्याभिषेक कर्म**

20-राज्याभिषेक क्या कहलाता है? **-प्रजा में अपने सम्राट के प्रति दिव्य-शक्ति, प्रभुत्व-सत्पन्नता का विश्वास।**

21-अश्वमेधयज्ञ क्या है? **-राजकीय यज्ञ जिसमें राजा द्वारा अश्व छोड़ा जाता है और उस अश्व के भ्रमण क्षेत्रों पर राजा का अधिकार हो जाता था।**

22-शतपथ ब्राह्मण में किन विदुषी कन्याओं का उल्लेख है? **-गार्गी, गन्धर्व, गृहीता, मैत्रेयी आदि।**

23-वैदिककाल का मुख्य व्यवसाय क्या था? **-कृषि एवं पशुपालन**

24-तैत्तिरीयोपनिषद् में अन्न को क्या कहा है? **-ब्रह्म (अन्नं वै ब्रह्म)**

25-उत्तरवैदिक काल का धार्मिक जीवन कैसा था? **-यज्ञ, अनुष्ठान युक्त**

26-देवताओं के कुछ प्रतीकों की पूजा कब आरम्भ हुयी? **-उत्तरवैदिक काल में**

27-भागवत धर्म क्या है? **-वैष्णव धर्म (श्रीकृष्णाधारित)**

28-भगवान् विष्णु के कितने अवतारों का उल्लेख है? **-चौबीस**

29-नारायण, नृसिंह एवं वामन कौन अवतार माने जाते हैं? **-दैवीय**

30-अन्य अवतारों को क्या माना गया है? -मानवीय

31-चतुर्व्यूह क्या है? **-संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और साम्ब की वीरों (वृष्णि) के रूप में पूजा।**

32-पाञ्चरात्र क्या है? **-वैष्णव धर्म का प्रधान** मत। इसमें परमतत्त्व, **मुक्ति, युक्ति, योग और विषय ये पाँच पदार्थ हैं।**

33-शैव सम्प्रदाय के मुख्य देवता कौन हैं? **-रुद्र/शिव**

34-शैव सम्प्रदाय कितने वर्गों में विभक्त हैं? **4- शैव, पाशुपत, कापालिक तथा कालामुख**

35-शाक्त सम्प्रदाय में किसकी पूजा होती है? **-मातृ देवियों/शक्तियों की**

36-शाक्त सम्प्रदाय की मुख्य देवी कौन हैं? **-माताकाली, माता दुर्गा।**

37-चौंसठ योगिनियों का मन्दिर कहाँ है? **-जबलपुर।**

जैन धर्म एक दृष्टि

1.जैन धर्म में कुल कितने तीर्थङ्कर हुए? **-24 (प्रथम-ऋषभदेव)**

2.जैन में 23वें तीर्थङ्कर कौन थे? **-पार्श्वनाथ**

3.पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत **-सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, आत्तेय**

4.24वें तीर्थकर कौन थे? **-महावीर स्वामी** यही इस धर्म के संस्थापक माने जाते हैं

5.महावीर- इनका जन्म वैशाली के निकट '**कुण्डग्राम**' ज्ञातृक कुल के प्रधान सिद्धार्थ के यहाँ **450 ई.पू.** में हुआ था। इनकी माता का नाम-**त्रिशला** (यह लिच्छवि की राजकुमारी थी) इनकी पत्नी का नाम **यशोदा** था। पुत्री-**प्रियदर्शना**, जिसका विवाह **जामालि** नामक क्षत्रिय से हुआ, जो बाद में **प्रथम शिष्य** बना। 30 वर्ष की अवस्था में इन्होंने अपना घर छोड़ दिया था।

-12 वर्षों की कठिन साधना के बाद **जुम्भिक ग्राम** के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे एक '**सालवृक्ष**' के नीचे इन्हें '**कैवल्य**' (सर्वोच्च ज्ञान) प्राप्त हुआ। इसके बाद इन्हें **केवलिन, जिन (विजेता) अर्ह (योग्य) एवं निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित)** आदि उपाधियों से जाना जाता है। 468 ई. पू. 72 वर्ष की अवस्था में '**पावापुर**' में इन्होंने अपना देहत्याग किया।

6.स्वामी महावीर ने पाँचवां महाव्रत क्या जोड़ा? **-ब्रह्मचर्य**

7.जैनधर्म के त्रिरत्न कौन हैं? **-सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचरण**

8.जैनधर्म के अनुसार संसार क्या है? **-6 द्रव्यों से बना है। जीव, पुद्गल-(भौतिक तत्त्व) धर्म, अधर्म, आकाश और काल**

9.जैनधर्म में जीव का अन्तिम लक्ष्य क्या है? **-निवार्ण**

10.जैनधर्म में भिक्षुओं एवं गृहस्थों के लिए क्या व्यवस्था थी? **-भिक्षुओं के लिये -महाव्रत, गृहस्थों के लिये -पांच अणुवत**

11.जैनधर्म के अनुसार ज्ञान के कितने स्रोत हैं? **-तीन, (प्रत्यक्ष, अनुमान तथा तीर्थंकरों के वचन)**

12.अनन्त चतुष्टय क्या है? **-मोक्ष के बाद जीव को आवगमन के चक्र से मुक्त हो जाना ही अनन्त चतुष्टय है।**

(1.अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्तवीर्य तथा अनन्त सुख)।

13.जैनधर्म के दो समुदाय कौन हैं? **-तेरापन्थी-** श्वेताम्बर, **समैया-** दिगम्बर

14.दिगम्बर कौन थे? **-भद्रबाहु तथा इनके अनुयायी जो दक्षिणी** जैनी थे।

15.श्वेताम्बर कौन थे? **-स्थलबाहु तथा उनके अनुयायी,** ये लोग श्वेत **वस्त्र धारण करते हैं, इन्होंने स्वामी महावीर एवं अन्य तीर्थंकरों की पूजा आरम्भ की।**

16.किन राजाओं के शासन काल में जैन धर्म का अधिक प्रसार हुआ?

-राष्ट्रकूट (दक्षिण-भारत) गुजरात, राजस्थान, उज्जैन, मथुरा

विशेष- *-जैन धर्म में देवताओं को स्थान है किन्तु जिन के बाद।*

-जैनधर्म सृष्टि को स्वीकारता है किन्तु उसके कर्ता को नहीं।

-यहाँ भी पुण्य एवं पाप कर्म के अनुसार पुनर्जन्म माना जाता है।

-कर्मवाद-कर्मफल ही जन्म और मृत्यु का कारण है।

-सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का सन्देश ही इस धर्म का मूल है।

-यहाँ अहिंसा पर विशेष बल दिया जाता है।

17.उपवास द्वारा शरीर त्याग को क्या कहते हैं? **-सल्लेखना**

18.सल्लेखना क्या है? **-सत् = अच्छाई का, लेखना = लेखा-जोखा।**

(सुखपूर्वक शोकरहित होकर मृत्यु का वरण करना ही सल्लेखना है)

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजाया च निष्प्रतीकारे।

धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनाभार्याः।।

अर्थात् घोर एवं अनिवार्य उपसर्ग, दुर्भिक्ष, वृद्धावस्था एवं रोग की स्थिति आ जाए एवं इनका कोई उपाय सम्भव न हो सके तो धर्म साधन के लिए सुख पूर्वक शोक रहित होकर मृत्यु का वरण कर लेना चाहिए, यही सल्लेखना है।

-सम्राट् चन्द्रगुप्त ने इसी विधि के द्वारा शरीर त्यागा था। इनके शासनकाल में भयंकर अपराधियों के लिए भी यही व्यवस्था थी।

जैन धर्म के 24 तीर्थंकर

1.ऋषभदेव-(आदिनाथ) 2.अजितनाथ, 3.सम्भवनाथ, 4.अभिनन्दन, 5.सुमतिनाथ, 6.पद्मप्रभु, 7. सुपार्श्वनाथ, 8.चन्द्रप्रभु 9.सुविधिनाथ, 10.धर्मनाथ, 11. श्रेयांसनाथ, 12.वासुमूल, 13.विमलनाथ, 14.अनन्तनाथ, 15.धर्मनाथ, 16.शान्तिनाथ, 17. कुन्थुनाथ 18. अमरनाथ, 19. मल्लिनाथ, 20. मुनिसुव्रत, 21. नेमिनाथ, 22. अरिष्टनेमि, 23.पार्श्वनाथ, 24.महावीर-स्वामी।

जैन संगीतियां

1. 300 ई.पू.चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र में। **धर्मप्रधान भाग** के12 अंगों का सम्पादन, तथा दिगम्बर -श्वेताम्बर दो भागों में विभाजन हुआ।

2. गुजरात के वल्लभी में 513 ई.पू. देवाचिधर्म **क्षमाश्रमण** के नेतृत्व में ग्रन्थों के संकलन व सम्पादन-

19.जैनसंघ के सदस्य कितने भागों में बंटे थे? **-चार**

20.महावीर के मौलिक सिद्धान्तों के संकलन को क्या कहते हैं? **-पूर्व**

21.जैनमठों को क्या कहा जाता है? **-बसादी (बसदिस)**

22.जैनधर्म में शिक्षण प्रधानों को क्या कहा जाता है? - **गन्धर्व, प्रमुख-11हैं।**

23.जैनधर्म की भाषाएं **-बोलचाल के लिये-प्राकृत, रचना -अर्ध मागधी एवं अपभ्रंश।**

24.जैनधर्म में किस पर अधिक बल दिया गया? **-तप, अहिंसा।**

25.जैनधर्म का महत्वपूर्ण ग्रन्थ क्या है? **-कल्प**

26.जैनधर्म -वेदों की प्रामाणिकता नहीं मानता है।

27.यह हिन्दु धर्म के अत्यन्त निकट है।

28 कर्मफल से मुक्त होने के लिए क्या आवश्यक है? **त्रिरत्न**

29.जैन अवशेष कहाँ मिलते हैं? **-खारवेल के हाथी गुम्फा, खण्डगिरि या उदयागिरि की गुफाएं**

30.जैनधर्म के समर्थक राजा कौन थे? **-उदयन, बिम्बिसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्तमौर्य, बिन्दुसार और खारवेल।**

31.कौन राजा जैन संन्यासी बन गया था? **-राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष**

32. महावीर की पहली महिला भिक्षुणी कौन थी? -चम्पा के राजा दधिवाहन की पुत्री-चन्दना।

33. जैन साहित्य को क्या कहा जाता है? -आगम (सिद्धान्त)

34. जैनधर्म का इतिहास ग्रन्थ कल्पसूत्र के लेखक कौन हैं? -भद्रबाहु

35. परिशिष्ट पर्व के लेखक कौन हैं? **-हेमचन्द्र** (17वीं शताब्दी, इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य की घटनाएं वर्णित हैं)।

36. हरिभद्रसूरि की मुख्य रचनाएं कौन-कौन सी हैं? -समरादित्य कथा, मूर्खाख्यान, कथाकोष

37. उद्योतन सूरि की रचना **-कुवलयमाला**

38. जिनसेन की रचना- आदिपुराण

39. गुणभद्र की रचना- उत्तरपुराण

40. ऐतिहासिक रचनाओं में भारत का प्रथम राजनैतिक ग्रन्थ कौन है? (चन्द्रगुप्त **मौर्य के प्रधानमन्त्री- कौटिल्य (चाणक्य)**

46. अर्थशास्त्र के रचनाकार कौन हैं? **-विष्णुगुप्त**

47. विशाखदत्त की रचना- **मुद्राराक्षस**

48. सोमदेव की रचना- **कथा सरित्सागर**

49. क्षेमेन्द्र की रचना- **बृहत्कथा मञ्जरी**

50. शूद्रक की रचना- **मृच्छकटिकम्**

51. कामन्दक की रचना- **नीतिसार**

52. कल्हण की रचना- **राजतरंगिणी** (ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लेखन का ग्रन्थ, कश्मीर का सम्पूर्ण इतिहास मिलता है)

53. सोमेश्वर की रचना- **रसमाला, कीर्तिकौमुदी**

54. मेरुतुंग की रचना- **प्रबन्ध चिन्तामणि**

55. राजशेखर की रचना- **प्रबन्ध कोश**

(यहाँ तक गुजरात के चालुक्य वंश तथा उस समय की स्थिति का वर्णन है)

56.

अश्वघोष	**बुद्धचरितम्**
बाणभट्ट	**हर्षचरितम्**
वाक्पति	**गरुडवहो**
विल्हण	**विक्रमांक देव चरित**
पद्मगुप्त	**नव साहसांक चरित**
हेमचन्द्र	**कुमारपाल चरित**

जयानक पृथिवीराज विजय

(इनमें ऐतिहासिक जीवनियों पर आधारित रचनाएं हैं)।

विदेशी यात्रियों एवं लेखकों से सम्बन्धित आख्यान-

1-यूनानी मेगस्थनीज ने क्या लिखा **-इण्डिका**

2-चीनी यात्रियों में प्रमुख थे **-फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग**

3-फाह्यान किसके समय भारत आया? **-चन्द्रगुप्त द्वितीय** (विक्रमादित्य 5वीं सदी)

4-ह्वेनसांग किसके समय भारत आया?**-हर्ष- 7वीं सदी**

5-इत्सिंग किसके समय भारत आया? **-हर्ष 7वीं सदी**

6-चीनी यात्रियों में प्रिंस ऑफ पिल्ग्रिम्स किसे कहते हैं? **-ह्वेनसांग**

7-अरबी यात्री कौन थे? **-अल्बरूनी, सुलेमान, अलमसूदी**

8-अरबी यात्रियों में सर्वाधिक योग्य कौन था? **-अल्बरूनी (ज्योतिष,गणित, विज्ञान, अरबी, फारसी तथा संस्कृत का ज्ञाता था।** (महमूद गजनवी ने प्रभावित होकर इन्हें अपना राज्य ज्योतिषी बनाया था)।

बौद्ध धर्म एक दृष्टि

बौद्ध का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञानी' है। बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है, इसमें मानव प्रतिष्ठा पर ही बल दिया है। यह पुनर्जन्म में विश्वास तो करता है किन्तु अनात्मवादी है। यहाँ वर्ण एवं जाति दोनों की व्यवस्थाओं का विरोध किया गया है। अतएव यहाँ स्त्री-पुरुष सबको प्रवेश का अधिकार था। यदि कोई वर्जित था तो चोर, हत्यारे, ऋणी, राज-सेवक, दास तथा रोगी व्यक्ति।

बौद्धधर्म का योगदान विशेष रूप से भारतीय दर्शन में तर्कशास्त्र की प्रगति का है। इसी में शून्यवाद तथा विज्ञानवाद की दार्शनिक पद्धतियों का उदय हुआ। इससे प्रभावित आद्यगुरु शङ्कराचार्य के दर्शन भी रहे, अतः इन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' भी कहा जाता है।

इसके साथ भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास साँची, भरहुत, अमरावती के स्तूपों, अशोक के शिलास्तम्भों कार्ले, अजन्ता, एलोरा, बाघ तथा बराबर की गुफाएं श्रेष्ठतम आदर्श हैं।

1.बौद्ध साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ कौन है? **-त्रिपिटिक**

2.त्रिपिटक में कौन-कौन से ग्रन्थ हैं? **-सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्म पिटक**

(क) सुत्तपिटक- बुद्ध के धार्मिक विचारों एवं वचनों का संग्रह

(ख) विनयपिटक- बौद्ध-संघ के नियम।

(ग) अधिधम्म पिटक- बौद्ध दर्शन का विवेचन। (पिटक = टोकरी)

3. जातकग्रन्थ क्या है? **बुद्ध के पूर्वजन्म की काल्पनिक कथाएं हैं।**

4. निकाय ग्रन्थ क्या है? **बौद्धधर्म के सिद्धान्त तथा कहानियों का संग्रह है।**

5. बौद्ध-साहित्य प्रायेण किस भाषा में लिखे गये हैं? **पालि**

6. बौद्ध-धर्म के प्रवर्तक कौन हैं? **-महात्मा गौतम बुद्ध**

7. गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था? **-लुम्बिनी (कपिलवस्तु-नेपाल) 563 ई.पू.**

8. गौतम बुद्ध का जन्म किस कुल/वंश में हुआ था? **-शाक्य वंश (क्षत्रिय कुल)**

9. गौतम बुद्ध का के माता-पिता का क्या नाम था? **-महामाया/ शुद्धोधन**

10. बाल्यकाल में ही माता की मृत्यु के बाद पालन किसने किया? **-मौसी (प्रजापति गौतमी)**

11. गौतम बुद्ध का विवाह किससे हुआ था? **-16 वर्ष की अवस्था में शाक्यकुल की कन्या यशोधरा उपनाम बिम्बा, गोपा, भद्कच्छना) से हुआ था।**

12. सिद्धार्थ के पुत्र का क्या नाम था? **-राहुल**

13. गौतम बुद्ध का पूर्वनाम क्या था? **-सिद्धार्थ**

14. 21 वर्ष की अवस्था में घर त्यागे, इसे क्या कहा जाता है? **-महाभिष्क्रमण**

15. सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध कब बने? -छः वर्षों के कठिन तप व साधना से 35 **वर्ष की अवस्था में** उरुबेला (बोध गया बिहार) पुनपुन (निरंजना) नदी के तट पर विशाल पीपल (वटवृक्ष) के नीचे इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इस दिन वैशाख पूर्णिमा थी। इसी के बाद ये 'तथागत' हुये और गौतम बुद्ध कहलाए।

16. जहाँ इन्हें बुद्धत्व/ज्ञान प्राप्त हुआ उसे क्या कहते हैं? **-बोधगया (बिहार)**

17. बोधगया से कहाँ प्रस्थान किए? **-सारनाथ (वाराणसी-उ0प्र0)** यहाँ कौडिन्य आदि पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया (इस स्थान को ऋषिपत्तनम् एवं मृगदाव कहते हैं)।

18. महात्मा बुद्ध के प्रथम उपदेश को क्या कहा जाता है? **-धर्मचक्र प्रवर्तन**

19. महात्मा बुद्ध के प्रथम अनुयायी कौन बने? **-तपुस्स एवं मल्लिक**

20. बुद्ध के प्रसिद्ध अनुयायी शासक कौन थे? **-बिम्बिसार, प्रसेनजित, उदयन**

21. बौद्धसंघ की स्थापना कहाँ हुई? **-सारनाथ (वाराणसी, उ.प्र.)**

22. महात्मा बुद्ध ने अपना शरीर कहाँ त्यागा था? **-हिरण्यवती नदी के तटपर**

कुशीनारा (सम्प्रति कुशीनगर)483 ई0 पू0
(80वर्ष की अवस्था में)

23. महात्मा बुद्ध के शरीर-त्याग को क्या कहा गया? **-बौद्ध परिनिर्वाण**

24. महात्मा बुद्ध के सर्वाधिक उपदेश एवं प्रचार के क्षेत्र कौन थे? **-श्रावस्ती (कोसल देश) मगध।**

25. महात्मा बुद्ध ने मृत्यु पूर्व अपना अन्तिम उपदेश किसे दिया? **-कुशीनगर के परिव्राजक सुभुच्छ को।**

26. महापरिनिर्वाण के बाद इनकी अस्थि अवशेषों को कितने भागों में विभाजित किया गया है?- **8 भाग वहाँ वहाँ के शासकों ने उन अवशेष पर स्तूप निर्माण करावाया था।**

27. बौद्धधर्म के संन्यासी को क्या कहा जाता है? **-भिक्षु**

28. बौद्धधर्म के त्रिरत्न कौन है? **-बुद्ध, धम्म, संघ**

29. बौद्धधर्म के मूलाधार चार आर्यसत्य कौन हैं? **-1.दुःख, 2.दुःख समुदाय, 3.दुःख विरोध, 4.दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा** (दुःख निवारक मार्ग)

30. दुःख निवारक (तृष्णा नाशक) कितने मार्ग हैं? **-अष्टांगिक मार्ग इन्हें मज्झिम प्रतिपदा (मध्यम मार्ग) भी कहते हैं।**

31. अष्टांगिकमार्ग के मुख्याभाग- 3 हैं- **-प्रज्ञाज्ञान, शील तथा समाधि**

32. आठ मार्ग या उपाय कौन हैं? **-सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि** (इनका स्रोत तैत्तिरीय उपनिषद् है)।

33. अष्टांगिक मार्ग भिक्षुओं के लिए क्या माने जाते हैं? **-कल्याण मित्र**

34. बौद्धधर्म के अनुसार मानव जीवन का परम लक्ष्य क्या है? **-निर्वाण प्राप्ति** (अर्थात् जीवन मरण के चक्र से मुक्ति) जो इस जीवन से ही हो सकता है।

35. बुद्ध के अनुसार नैतिक जीवन के आधारभूत शील कितने हैं? **-10 शील, इनका वर्णन छन्दोग्य उपनिषद् में भी मिलता है।**

36. बौद्धधर्म के सम्प्रदाय कौन से हैं? **-हीनयान, महायान**

37. बौद्धधर्म में प्रतीत्य समुत्पाद क्या है? **-अज्ञानता का चक्र** (प्रतीत्य = किसी वस्तु के रहने पर) समुत्पाद = किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति)

38. बौद्धसंघ में प्रवेश को क्या कहा जाता है? **-उपसम्पदा**

39. बौद्धों का सबसे पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण त्योहार?**-वैशाख पूर्णिमा** (बुद्धपूर्णिमा)

40.बुद्धपूर्णिमा क्यों पवित्र है? -इसी दिन महात्मा बुद्ध का **जन्म, बुद्धत्व (ज्ञान) एवं महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुयी थी।**

41.अष्ट महास्थान किसे कहा जाता है? -**लुम्बिनी** (नेपाल), **गया** (बिहार) **सारनाथ** (वाराणसी), **कुशीनगर, श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह** तथा **वैशाली।**

42.धार्मिक सभाओं को क्या कहा जाता था? -**संगीति** (जो चार बार हुयी थी,

1.हर्यक वंश के शासनकाल राजगृह में जहां विनय तथा सुत्त पिटक का संकलन किया गया।

2. शिशुनागवंश के शासन काल-वैशाली में हुआ, जहाँ बौद्धधर्म का स्थाविर और महासांघिक दो भागों में विभाजन हुआ।

3. मौर्यवंश -अशोक के शासन काल -पाटलिपुत्र में जहाँ अभिधम्मपिटक को जोड़ा गया।

4.कुषाणवंश -कनिष्क के शासनकाल -कश्मीर में जहाँ हीनयान-महायान दो सम्प्रदायों का विभाजन हुआ।

43.बौद्धस्तूप- जो विश्व का सबसे विशाल है **-बोरोबुदूर-इण्डोनेशिया।**

44.महात्मा बुद्ध के अस्थि अवशेषों पर निर्मित प्राचीनतम स्तूप कौन है? **-महास्तूप-भट्टि-दक्षिणभारत।**

45.बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित बौद्धधर्म के प्रतीक-

घटना	**चिह्न/प्रतीक**
जन्म	कमल व सांड
गृहत्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल (बोधिवृक्ष, महाबोधि)
निर्वाण	पद-चिह्न
मृत्यु	स्तूप

46.बौद्ध धर्म में चैत्य किसे कहते हैं? **-मन्दिर या प्रार्थना स्थल**

47.बौद्ध धर्म में विहार किसे कहते हैं? **-भिक्षु-निवास**

48.महात्मा बुद्ध किन नामों से जाने जाते हैं? **-बुद्ध, तथागत, शाक्यमुनि**

49.बौद्ध धर्म-ग्रन्थों के महान् टीकाकार **-बुद्धघोष है।**

48.महायान सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ **-प्रज्ञापारमिता**

49.अश्वघोष कौन थे? **-प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् जो धर्म-प्रचारक, संगीतकार, नीतिशास्त्री, दार्शनिक, नाटककार, कथाकार, अन्वेषक ।**

50.बौद्धधर्म में तर्कशास्त्र के प्रवर्तक कौन थे? -दिङ्नाग

51.किस विद्वान् भिक्षु ने बौद्ध रचनाओं को चीनी में अनुवाद दिया? -नागार्जुन

52.बुद्ध के उपदेशों को बिना किसी परिवर्तन अपनाने वाले -हीनयानी (रूढ़िवादी तथा व्यक्तिवादी हैं)

53.हीनयान सम्प्रदाय के ज्यादातर लोग कहाँ हैं? -श्रीलंका, वर्मा, जावा आदि

54.हीनयान के दो और सम्प्रदाय कौन हैं? -वैभाषिक, सौत्रान्तिक

55.महायान- **बौद्धधर्म को सरल करने वाले महायानी कहे जाते हैं। महायान = उत्कृष्टमार्ग) इसके ग्रन्थ ज्यादातर संस्कृत में लिखे गये। ये बुद्ध के मूर्ति पूजा समर्थक तथा संस्कारों के पक्षपाती थे। इसके संस्थापक-नागार्जुन थे। इसका आदर्श बोधिसत्व है। इसके भी दो सम्प्रदाय हुये-शून्यवाद, विज्ञानवाद। शून्यवाद (सापेक्ष्यवाद) को नागार्जुन एवं विज्ञानवाद (योगाचार) को मैत्रेय नाथ ने की थी।**

56.बौद्धधर्म में तन्त्र-मन्त्र के प्रभाव को मानने वाले -**वज्रयानी** कहलाया।

57.किन शासकों ने बौद्धधर्म के प्रचार में योगदान किया? -**अशोक, मिनाण्डर, कनिष्क तथा हर्षवर्द्धन, बिहार एवं बंगाल में पाल शासक**

58.बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र कौन थे? **नालन्दा, विक्रमशिला ।**

59. वैशाली की नगरवधु कौन थी जो बाद में शिष्य बनी? -**आम्रपाली**

60. महात्मा बुद्ध के प्रिय शिष्य कौन थे? -**सारिपुत्र, महामौद्गिलायन, आनन्द, उपालि, देवदत्त।**

प्रमुख रचनाएं

ग्रन्थ	रचनाकार
मिलिन्द पन्हो (पाली)	नागसेन
बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण (संस्कृत)	अश्वघोष

इस्लाम धर्म एक दृष्टि

इस्लाम के दो अर्थ हैं। एक अर्थ है शान्ति दूसरा है ईश्वर-शरणता। इस्लाम का धर्मग्रन्थ 'कुरान' है। जो जगत् में 'दीन' (धर्म), एक है, 'मजहब' अलग-अलग है को मानता है। यहाँ भी सत्य के मार्ग पर चलना 'दीन' है और सत्य का अनुसरण करके चलने का पन्थ अर्थात् मजहब है। यहाँ सबको एक 'उस्मत' अर्थात् मजहब का माना गया है। चाल-चलन, रीति-रिवाज के कारण भेद हो गया है।

नैतिकता का आचरण, सत्य बोलना बड़ों का आदर करना आदि सभी धर्मों के मूल में हैं। किन्तु यहाँ कुछ विशेष बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए-

-मुहम्मद पैगम्बर साहब ने सत्य को अपना आधार बनाया। उन्होंने कहा हमारा साधन सब्र यानि शक्ति है।

-डरने की अपेक्षा अल्लाह की सेवा में लड़ना अच्छा है और आत्मरक्षा के लिए शस्त्र धारण करना चाहिए।

-मुहम्मद साहब ने कहा लड़ते समय गुस्सा नहीं आना चाहिए, गुस्सा आये तो शस्त्र नहीं चलाना चाहिए।

-कुरान का आदेश है 'पाप का प्रतिकार पुण्य से ही होना चाहिए। बुराई रफा' करनी है तो वह अच्छाई से ही हो सकती है।

इस्लाम धर्म से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-

1. इस्लाम किस भाषा का शब्द है? -अरबी
2. इस्लाम का क्या अर्थ है? -अल्लाह को समर्पण
3. इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रन्थ कौन है? -कुरान
4. इस्लाम धर्म के संथापक कौन थे? -हजरत मुहम्मद साहब
5. हजरत मुहम्मद साहब का जन्म कब और कहाँ हुआ था? -570ई., मक्का-सऊदी अरब
6. हजरत साहब के माता-पिता का क्या नाम था? -अमीना-अब्दुल्ला
7. हजरत साहब की पत्नी और पुत्री का क्या नाम था? -खदीजा, पुत्री-फातिमा
8. हजरत साहब की मक्का से मदीना की यात्रा को क्या कहते हैं?-हिजरत
9. हजरत साहब को ज्ञान कब और कहाँ प्राप्त हुआ? -610ई. हिरा नामक गुफा में
10. ज्ञान प्राप्ति के बाद हजरत साहब को किस नाम से जाना जाता है? -पैगम्बर (दूत)
11. हजरत साहब की मृत्यु कब हुयी थी? -8जून 632 ई.
12. मृत्यु के बाद हजरत साहब को कहाँ दफनाया गया? -मक्का
13. मृत्यु के बाद इस्लाम किन दो पन्थों में बंट गया? -सुन्नी और शिया
14. हजरत साहब के उपदेश किस पुस्तक में संग्रहीत हैं? -हदीस में
15. मुहम्मद पैगम्बर के बाद उत्तराधिकारी क्या कहलाये? -खलीफा
16. पैगम्बर साहब के बाद इस्लाम के खलीफा कौन थे?- -अबूबक्र उमर फिर उस्मान, फिर अली हुये।
17. कुरान में खलीफा शब्द का क्या अर्थ है? -पृथ्वी पर खुदा का प्रतिनिधि।
18. खलीफाओं की प्रारम्भिक राजधानी कहाँ थी? -मदीना, फिर दमिश्क, फिर बगदाद।
19. मुसलमानों का पवित्र पर्व कौन सा है? -ईद-ए-मिलाद-उन-नबी
20. इस्लाम के हिजरी संवत् में वर्ष कितने दिनों का है? -354

सिख धर्म एक दृष्टि

1. सिख धर्म की स्थापना कब हुयी? -15वीं सदी
2. सिख धर्म के संस्थापक कौन थे? -गुरु नानक देव
3. गुरुनानक देव के माता-पिता कौन थे? -तृप्ता देवी-कालू मेहता
4. गुरुनानक साहिब की मृत्यु कब-कहाँ हुयी? -1539- करतारपुर
5. सिख धर्म का प्रमुख तथा आदि ग्रन्थ कौन सा है? -गुरुग्रन्थ साहिब
6. गुरुग्रन्थ साहिब का संकलन किस सिख गुरु ने कराया? -अर्जुन देव
7. सिख धर्म के अनुयायियों के लिये पाँच अनिवार्य आदेश ? -केश, कडा, कंघी, कच्छेरा तथा कृपाण
8. खालसा पन्थ की स्थापना किसने कब की? -दसवें गुरु, गुरु गोविन्द सिंह, 1699 में केशगढ, आनन्दपुर साहिब में।
9. स्वर्ण मन्दिर की नींव किसने रखी? -पाँचवें गुरु अर्जुन देव, 1604ई.
10. स्वर्ण मन्दिर कहाँ स्थित है? -अमृतसर
11. पञ्जाबी भाषा की लिपि क्या है? -गुरुमुखी
12. गुरुमुखी लिपि का आरम्भ किसने की थी? -गुरु अंगद ने
13. सिख धर्म में अभिवादन क्या है?-वाहेगुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह
14. सिख जयकारा क्या है? -जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल
15. सिखों के पाँच तख्त कौन हैं? 1.अकाल तख्त- अमृतसर, 2.पटना साहिब, 3.केशगढ-आनन्दपुर, 4.हजुर साहिब-नादेड, 5.दमदमा साहिब- भटिंडा
16. सिख धर्म में शादी को क्या कहा जाता है? -आनन्द कारज
17. सिख कलेण्डर को किस नाम से जाना जाता है? -नानकशाही कलैंडर
18. नानकशाही कलैंडर का पहला माह कौन है? -चैत (14 मार्च)
19. गुरुगोविन्द सिंह की रचनाएँ हैं? -दशमग्रन्थ, चंडी चरित्र, विचित्र नाटक, जफरनामा
20. सिख धर्म के प्रमुख सम्प्रदाय- -अकाली, नामधारी, उदासी सम्प्रदाय
21. सिख सम्प्रदाय के धार्मिक स्थल को कहते हैं? -गुरुद्वारा
22. सिख सम्प्रदाय के 10 गुरु- 1.सतगुरु नानक देव 2.गृरु अंगद देव 3.गुरु अमर दास 4. गुरु रामदास 5.गुरु अर्जुन देव 6.गुरु हरि गोविन्द 7.गुरु हरि राय 8.गुरु हरि कृष्ण 9.गुरु तेग बहादुर 10.गुरु गोविन्द सिंह।
23. पंज (पाँच) प्यारे कौन थे? -भाई साहिब सिंह, धरम सिंह, हिम्मत सिंह, मोहकम सिंह और दया सिंह
24. सिख धर्म में एक ही ईश्वर माना जाता है? -एक ओंकार (जो अकाल और निरंकार है।
25. जपुजी क्या है? -गुरु नानक ने अपनी अन्तिम यात्रा के बाद इसे लिखा।
23. भारत आजादी के महान सिख क्रान्तिकारी? -शहीद-ए-आजम भगत सिंह

सभी धर्मों का सार-

हिन्दु- सर्वधर्मान् परित्यज्य मामें शरणं व्रज) गीता

(सारे धर्म तजकर एक मेरी शरण में आ जा)।

इस्लाम- **ला इलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह**

(अल्लाह एक ही है उसकी जगह कोई नहीं ले सकता)।

इसाई- **लेट दाय विल बी डन, नॉट माइन।**

( )।

सिख- **नानक हुकमै जे बुझै न हउमै कहै न कोई।**

विभिन्न ऐतिहासिक वंश

1. हर्यक वंश **बिम्बिसार** **समय 544-492 ई.पू.**

-हर्यकवंश की स्थापना- मगध साम्राज्य में हुआ था। बिम्बिसार ने अंग को जीतकर मगध में मिला लिया और वहाँ अजातशत्रु को शासक नियुक्त किया था, अजातशत्रु बिम्बिसार का पुत्र था।

-मगध की राजधानी कौन थी? गिरिव्रज (राजगृह)

-अजातशत्रु अपने पिता की हत्या कर स्वयं शासक बना।

-अजातशत्रु की भी हत्या उसके पुत्र उदयन ने कर दिया और शासक बना।

-उदयन ने ही गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र की स्थापना की तथा अपनी राजधानी बनाया।

-इस वंश के अन्तिम नागदशक को शिशुनाग नामक अमात्य ने पदच्युत कर शासक बन गया और शिशुनाग वंश की स्थापना की।

2.शिशुनाग वंश **शिशुनाग** **412-344 ई.पू.**

-शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर उसे भी मगध में मिला लिया।

-शिशुनाग ने पाटलिपुत्र के अलावा वैशाली को भी अपनी राजधानी बनाया।

-इस वंश का अन्तिम शासक नन्दिवर्द्धन (महानन्दिन) था।

3.नन्दवंश **महापद्मानन्द**

-महापदमानन्द के आठ पुत्रों मे घनानन्द इस वंश का अन्तिम शासक था।

-घनानन्द की हत्या कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्यवंश की नींव डाली।

4.मौर्य साम्राज्य **चन्द्रगुप्तमौर्य** **323-184 ई.पू.**

-चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी शासक सेल्यूकस को पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया था।

विभिन्न भारतीय शासकों के शासन काल के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचनाकार	रचनाएं	शासक
राजशेखर	कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, बालभारत, भुवनकोश, हरविलास, बालरामायण	महेन्द्रपाल (परम भट्टारक तथा महीपाल
श्रीहर्ष	नैषधीयचरित, खण्डन खण्डखाद्य	जयचन्द्र (कन्नौज)
राजकवि चन्द्रबरदाई	पृथिवीराजरासो (अपभ्रंशमहाकाव्य)	पृथ्वीराज-तृतीय
जयानक	पृथ्वीराज विजय (संस्कृत काव्य)	पृथ्वीराज-तृतीय
धनञ्जय	दशरूपक (संस्कृत ग्रन्थ)	मुंज
पद्मगुप्त	नवसाहसांक चरितम्	,,
जैन आचार्य हेमचन्द्र		जयसिंह (सिद्धराज
जयदेव	गीतगोविन्द	लक्ष्मण सेन
हलायुध	ब्राह्मण सर्वस्व	लक्ष्मण सेन
कल्हण	राजतरंगिणी	हर्ष (कश्मीर)
नागार्जुन		कनिष्क
अमरसिंह	अमरकोष	चन्द्रगुप्त विक्रमादित
भवभूति	उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्	कन्नौज राजा यशोवर्म
बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	हर्ष
दण्डी		नरसिंहवर्मन्, पल्लव
अमीर खुसरो		बलवन से अलाउद्दीन खिजली त

कुछ सम्बन्धित प्रश्न-

-किस शासक ने कसाइयों को व्यवसाय बन्द करने के लिए 3वर्ष की अग्रिम क्षतिपूर्ति देक अपने राज्य में पशु हत्या, मद्यमान, एवं द्यूतक्रीड़ा पर प्रतिबन्ध लगाया?

-अर्हत उपाधिधारी कुमारपाल।

-महमूद गजनवी से पराजित होकर किसने अग्नि में कूदकर आत्मदाह किया था? **-जयपाल**

भारतीय संवत् एवं उनके संस्थापक

महावीर सम्वत्	599 ई.पू.	-स्वामी महावीर जैन।
विक्रम सम्वत्	58	-विक्रमादित्य (मालवा संवत् अथवा कृत संवत्
शक् सम्वत्	78	-कुषाण वंशीय-कनिष्क द्वारा आरम्भ।
गुप्त सम्वत्	319	-चन्द्रगुप्तप्रथम द्वारा आरम्भ (बल्लभी सम्वत)
हर्ष सम्वत्	606	-वर्धनवंशीय हर्ष द्वारा स्थापित।
इलाही सम्वत्		-मुगलशासक-अकबरद्वार-आरम्भ।
हिजरी संवत्	622	-हजरत मोहम्मद साहब

पन्थ-धर्म तथा उनके ग्रन्थ

(धर्मानुगो गच्छति जीव एकः)

स्थल	धर्म	धर्मग्रन्थ	प्रणेता
मन्दिर	हिन्दू (सनातन)	श्रीमद्भगवद्गीता	भगवान् श्रीकृष्ण
गुरुद्वारा	सिख	श्री गुरुग्रन्थसाहब	श्री गुरुनानाक
बौद्धमन्दिर	बौद्ध	त्रिपिटक	महात्मा बुद्ध
यज्ञशाला	आर्य-समाज	सत्यार्थप्रकाश	स्वामी दयानन्द सरस्वती
मन्दिर	जैन	जैनागम (जिनवाणी)	स्वामी महावीर
मस्जिद	इस्लाम	कुरान	हजरत मोहम्मद साहब
चर्च	ईसाई	बाइबिल	ईसा (क्राइस्ट)

धार्मिक, निम्नजातीय एवं समाज-सुधार आन्दोलन

संगठन	संस्थापक	वर्ष	स्थान
आत्मीय सभा	राजा राममोहन राय	1515	कलकत्ता
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	1828	कलकत्ता
धर्मसभा	राधाकान्त देव	1829	कलकत्ता
तत्त्वबोधिनी सभा	देवेन्द्रनाथ टैगोर	1834	कलकत्ता
राधा स्वामी सत्संग	तुलसीराम	1861	आगरा
भारतीय ब्रह्मसमाज	केशवचन्द्र सेन	1866	कलकत्ता
प्रार्थना समाज	आत्माराम पाण्डुरङ्ग	1867	मुम्बई
दार-ऊल-उलूम (देवबन्द)	मु.कासिम नौतनवी एवं राशिद अहमद गंगोही	1867	देवबन्द
सत्यशोधक समाज	ज्योतिबा फूले	1873	महाराष्ट्र
अलीगढ आन्दोलन	सर सैय्यद अहमद खान	1875	अलीगढ
आर्यसमाज	स्वामीदयानन्द सरस्वती	1875	मुम्बई
अहमदिया आन्दोलन	मिर्जा गुलाम अहमद	1889	फरीदकोट

कुछ पर्यायवाची शब्द (प्रतिशब्द)

अनोखा	-अद्भुत, अद्वितीय, अनुपम, अतुल, अनूठा, अपूर्व, अलौकिक।
अमृत	-अमिय, पीयूष, सुधा, सोम, मधु, सुरभोग।
अर्जुन	-पार्थ, धनञ्जय, कौन्तेय, गुडाकेश, भारत, गाण्डीवधारी।
अंग	-अवयव, अंश, भाग, हिस्सा।
अहंकार	-गर्व, दर्प, दम्भ, अभिमान, घमण्ड, अहं।
आकाश	-नभ, अन्तरिक्ष, अम्बर, अनन्त, गगन, व्योम, शून्य, अनन्त, आसमान।
आँख	-नेत्र, चक्षु, अक्षि, नयन, दृग, दृष्टि, लोचन, विलोचन।
आग	-अग्नि, अनल, पावक, ज्वाला, धनञ्जय, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, दहन, धूमकेतु, धूमशिखा।
आम	-आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल।
आरम्भ	-श्रीगणेश, प्रारम्भ, शुभारम्भ, शुरुआत, समारम्भ।
इच्छा	-अभिलाषा, आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा, वाञ्छा, ईहा, कामना।
कपडा	-वसन, वस्त्र, भूषा, पट, चीर, अम्बर।
कमल	-अम्भोज, अब्ज, अम्बुज, अरविन्द, जलज, कंज, पंकज, पद्म, राजीव, सरोज, सरोरुह, सरसिज, नलिन, पुण्डरीक, शतदल।
किरण	-रश्मि, प्रभा, अंशु, कर, मयूख, मरीचि, अर्चि, गो।
कोयल	-कोकिल, कोकिला, पिक, परभृत, वसन्तदूती, वसन्तप्रिय।
गधा	-गर्दभ, रासभ, खर, गदहा, वैशाखनन्दन, धूसर।
गंगा	-जाह्नवी, सुरसरि, त्रिपथगा, देवापगा, देवनदी, भागीरथी, मन्दाकिनी, विष्णुपदी।
गाय	-गौ, धेनु, सुरभि, गैया, गऊ, दोग्ध्री, पयस्विनी, गोपा।
घर	-गृह, गेह, आलय, कुटी, धाम, निकेतन, निलय, सदन, भवन, आगार, आयतन, आवास।
घोडा	-अश्व, तुरग, सैन्धव, घेटक, वाजि, हय।
चन्द्रमा	-शशि, चन्द्र, मयंक, राकेश, राकापति, इन्दु, मृगांक, सुधाकर, हिमाकर, निशाकर, कलानिधि।
जंगल	-अरण्य, वन, कानन, विपिन, कान्तार।
जीभ	-जिह्वा, रसना, रसज्ञा, रसिका, रसला, जबान।
झण्डा	-ध्वज, ध्वजा, पताका, केतु, केतन।
दुःख	-शोक, कष्ट, संकट, पीडा, व्यथा, क्लेश, वेदना, यातना, यन्त्रणा, खेद।
द्रौपदी	-सैरन्ध्री, कृष्णा, पाञ्चाली, याज्ञसेनी, द्रुपदसुता।
धन	-द्रव्य, वित्त, सम्पत्ति, सम्पदा, विभूति, वैभव।
धनुष	-धनु, चाप, शरासन, पिनाक, कोदण्ड, कमान।
नदी	-सरिता, वाहिनी, तटिनी, आपगा, निम्नगा, तरङ्गिणी, स्रोतस्विनी, निर्झरिणी।
पक्षी	-खग, विहग, विहंग, परिन्दा, चिडिया, शकुन्त, पतंग, द्विज, पत्रि।
पर्वत	-गिरि, नग, भूधर, भूमिधर, अद्रि, पहाड, शैल, अचल, तुंग।

पत्ता	-पर्ण, पत्र, पल्लव, किसलय, दल।
पत्नी	-भार्या, दारा, बहू, वधू, गृहिणी, कलत्र, अर्धांगिनी, प्राणप्रिया।
पृथिवी	-भू, भूमि, मही, उर्वी, इला, अचला, वसुधा, वसुन्धरा, रत्नगर्भा, धरा, धरणी, धरित्री, धरती, मेदिनी, ।
प्रकाश	-उजाला, कान्ति, प्रभा, ज्योति, द्युति।
पानी	-जल, पय, वारि, तोय, अम्बु, नीर, सलिल, उदक।
फूल	-पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन।
बाण	-तीर, शर, विशिख, इषु, शिलीमुख।
ब्राह्मण	-अग्रजन्मा, द्विजाति, भूदेव, भूसूर, महीदेव, महीसुर, विप्र।
बिजली	-विद्युत्, तडित, दामिनी, सौदामिनी, चपला, चञ्चला।
बेटा	-आत्मज, सुत, पुत्र, लडका, तनुज, सन्तति, हृदयांश, कुमार।
बेटी	-आत्मजा, सुता, पुत्री, लडकी, तनुजा, तनया, सन्तति, दुहिता, कुमारी।
मछली	-मीन, मत्स्य, झष, जलजीवा, शफरी।
मदिरा	-मद्य, सुरा, सोमरस, मधु, आसव, हाला, वारुणी, शराब।
मनुष्य	-मानव, मनुज, मनुपुत्र, ना, नर, इंसान, आदमी, व्यक्ति।
माला	-मालिका, हार, दाम, गुणिका, सुमिरनी, माल्य।
मित्र	-सखा, सुहृद्, मीत, सहचर, दोस्त।
मुक्ति	-मोक्ष, सद्गति, निर्वाण, अपवर्ग, स्वर्गवास, परमपद, कैवल्य।
मोर	-मयूर, नीलकण्ठ, शिखी, कलापी, केकी।
राजा	-भूपति, नरपति, महीपति, भूभृत्, नृप, नृपति, नरेन्द्र, सम्राट।
रात्रि	-निशा, रात, यामिनी, विभावरी, रजनी, शर्वरी, रैन, क्षपा, त्रियामा।
लक्ष्मी	-श्रीः, रमा, चञ्चला, कमला, कमलासना, पद्मा, पद्मासना, इन्दिरा, हरिप्रिया।
वायु	-पवन, प्रकम्पन, समीर, मरुत, वात, समीरण, बयार।
विद्वान्	-सुधी, धीर, कोविद, बुध, प्राज्ञ, मनीषी, विचक्षण, पण्डित।
वृक्ष	-द्रुम, तरु, पादप, विटप, पेड, रुख, गाछ।
सब	-सर्व, पूर्ण, सम्पूर्ण, पूरा, सभी, निखिल, अखिल, सकल, निःशेष।
सभा	-संगीति, परिषद्, अधिवेशन, बैठक, महासभा, गोष्ठी।
समुद्र	-सागर, उदधि, जलधि, पयेधि, नदीश, रत्नाकर, वारिधि, जलनिधि, सिन्धु।
समूह	-समुदाय, समवाय, वृन्द, गण, संघ, पुञ्ज, दल, झुण्ड, संघ, जत्था।
स्त्री	-नारी, वनिता, महिला, कान्ता, रमणी।
साँप	-सर्प, नाग, भुजङ्ग, भुजग, पन्नग, उरग, व्याल, अहि, फणी, फणधर।
सिंह	-शार्दूल, केशरी, मृगेन्द्र, हरि, शेर, पंचमुख, मृगराज, केशी, महावीर।
सुख	-प्रसन्नता, मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, आनन्द, उल्लास।
सूर्य	-रवि, अर्क, भानु, दिनेश, दिवाकर, भास्कर, सविता, आदित्य, मार्तण्ड, दिनकर, अंशुमाली, पूषन्, मित्र, मरीच, अंशुमान्।
सोना	-स्वर्ण, कञ्चन, काञ्चन, कनक, हेम, सुवर्ण, जातुरूप।

भारतीय-वंशपरम्परा

सूर्यवंश	-रघुकुल (श्रीरामचन्द्र)
चन्द्रवंश	-सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र
यदुवंश	-भगवान् श्रीकृष्ण
रघुवंश	-राजा रघु, अज, दिलीप, श्रीराम
हर्यकवंश	-बिम्बिसार
नन्दवंश	-महापद्मनन्द
मौर्यवंश	-चन्द्रगुप्तमौर्य
शुंगवंश	-पुष्यमित्र शुंग
कुषाण-वंश	-कनिष्क
गुप्तवंश	-चन्द्रगुप्त प्रथम (स्वर्णयुग)
गुलाम वंश	-कुतुबुद्दीन एबक
खिलजी वंश	-जलाउद्दीन फिरोज खिजली
तुगलकवंश	-गयासुद्दीन तुगलक
मुगलवंश	-बाबर, हुमायूँ, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब
मराठावंश	-छत्रपति शिवाजी

बाल्यावस्था के नाम/उपनाम और उपाधि

स्वामी विवेकानन्द	-नरेन्द्र नाथ दत्त
महर्षि वाल्मीकि	-रत्नाकर
गोस्वामी तुलसीदास	-रामबोला
भीष्म पितामह	-देवव्रत
सरदार भगत सिंह	-भाग्यवान्, शहीदे ऑजम
महात्मा बुद्ध	-सिद्धार्थ
महात्मा गाँधी	-मोहन दास, बापू, राष्ट्रपिता, महात्मा, अर्ध नगीन फकीर
लक्ष्मीबाई	-मनु, छबीली
डॉ. भीमराव अम्बेडकर	-बाबा साहेब
बल्लभभाई पटेल	-लौह पुरुष, सरदार
बाल गंगाधर तिलक	-लोकमान्य
रवीन्द्रनाथ टैगोर	-गुरुदेव, कविगुरु, विश्वकवि
सुभाषचन्द्रबोस	-नेताजी
जवाहरलाल नेहरू	-चाचा, पण्डित जी
पण्डित मदनमोहन मालवीय	-महामना
लाला लाजपतराय	-पंजाब केशरी
राजा जनक	-विदेहराज

	-दीनबन्धु
सी०एफ०एण्ड्रूज	-धर्मराज
युधिष्ठिर	-लौहमहिला, भारतकोकिला
सरोजनी नायडू	-सत्यवादी, राजा हरिश्चन्द्र
हरिश्चन्द्र	-विष्णुगुप्त
चाणक्य	-पाचांली, सैरन्ध्री
द्रौपदी	-मर्यादा पुरुषोत्तम/ रामभद्र
श्रीरामचन्द्र	-सीमान्त गाँन्धी
खान अब्दुल गफार खाँ	-देशबन्धु
चितरंजन दास	-शान्ति पुरुष
लाल बहादुर शास्त्री	-गुरुजी
सदाशिवराव गोलवलकर	-इस्लाम ए आदिल
अकबर	-देवपुत्र
कनिष्क	-छत्रपति
शिवाजी	-अमित्रघात
बिन्दुसार	-सम्राट्, प्रियदर्शी
अशोक	-भारतीय नेपोलियन
समुद्रगुप्त	-विक्रमादित्य, शक्रादित्य
चन्द्रगुप्त द्वितीय	-नाना साहेब
बालाजी बाजीराव	-मास्टर ब्लास्टर
सचिन तेन्दुलकर, विवियन रिचर्ड्स	-लिटिल मास्टर
सुनील गावस्कर	-हॉकी के जादूगर
मेजर ध्यानचन्द	-विद्यासागर
ईश्वरचन्द्र बन्दोपाध्याय	-लोकनायक, जे.पी.
जयप्रकाश नारायण	-शान्ति पुरुष
लाल बहादुर शास्त्री	-गरीब नवाज
ख्वाजा मुइनुद्दीन चिस्ती	-निराला
सूर्यकान्त त्रिपाठी	-अज्ञेय
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन	

लाजपत राय, गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल-लाल, बाल, पाल

भारतीय संस्थाओं के गौरवपूर्ण आदर्श-वाक्य

भारत सरकार	-सत्यमेव जयते	-*सत्य की ही जीत होती है।*
लोकसभा	-धर्मचक्र प्रवर्तनाय	-*धर्मचक्र आगे ले जाने के लिये है।*
सर्वोच्च-न्यायालय	-यतो धर्मस्ततो जयः	-*जहाँ धर्म है वहीं विजय है।*

श्रम मन्त्रालय -श्रम एव जयते *-श्रम ही विजयी होता है।*

थलसेना -सेवा अस्माकं धर्मः *-सेवा हमारा धर्म है।*

वायुसेना -नभः स्पृशं दीप्तम् *-आकाश को छूने वाले प्रकाशमान हों।*

नौसेना -शं नो वरुणः *-वरुण हमारे लिये कल्याणकारी हों।*

भारतीय तट रक्षक -वयं रक्षामः *-हम रक्षा करते हैं।*

सेना राजपूताना रायफल -वीरभोग्या वसुन्धरा *-धरती का भोग वीर ही करते हैं।*

दूरदर्शन -सत्यं शिवं सुन्दरम् *-सत्य कल्याणप्रद एवं सुन्दर है।*

आकाशवाणी -बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

-अधिकाधिक लोगों के हित के लिये और अधिकाधिक लोगों के सुख के लिये

डाकतार-दूरभाष -अहर्निशं सेवामहे *-(हम) दिन रात सेवा करते रहें।*

भारतीय जीवन बीमा निगम -योगक्षेमं वहाम्यहम् *-मैं योग-क्षेम का वहन करता हूँ।*

अखिलभारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान -शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

-शरीर ही सभी धर्मों (कर्त्तव्यों) को पूरा करने का साधन है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयेग -ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये *ज्ञान-विज्ञान से विमुक्ति प्राप्त होती है।*

वनस्थली विद्यापीठ -सा विद्या या विमुक्तये *विद्या मुक्ति का द्वार है।*

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय -श्रुतं मे गोपाय *-हे ईश्वर, मेरे सीखे हुये की रक्षा करें।*

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय -विद्ययाऽमृतमश्नुते *विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।*

दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय -आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

-हमारे लिये सब ओर से कल्याणकारी विचार आयें।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय -ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत

ब्रह्मचर्य के तप से देवलोग मृत्यु को जीत लेते हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय -निष्ठा धृतिः सत्यम् *-निष्ठा, धैर्य और सत्याचरण*

बंगाल अभियान्त्रिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय -उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

उठो, जागो और तब तक मत रुको जबतक लक्ष्य न प्राप्त हो।

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रयागराज सिद्धिर्भवति कर्मजा

-श्रम ही सफलता का मन्त्र है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई -ज्ञानं परमं ध्येयम् *-ज्ञान परम ध्येय है।*

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर -तमसो मा ज्योतिर्गमय

-हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें

भारतीय प्रशासनिक कर्मचारी महाविद्यालय -संगच्छध्वं संवदध्वम् *-साथ चलो साथ बोलो*

भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी -योगः कर्मसु कौशलम् *-कर्मों में कुशलता ही योग है।*

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम् -योऽनूचानः स नो महान् *-जो विज्ञान से समपन्न है वही श्रेष्ठ है।*

जवाहर नवोदय विद्यालय -प्रज्ञानं ब्रह्म *-उच्च ज्ञान ही ब्रह्म है।*

केन्द्रीय विद्यालय संगठन -तत्वं पूषन्नपावृणु *-हे ईश्वर, ज्ञान पर छाये आवरण को हटाइये।*

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड -असतो मा सद्गमय *-हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलें*

राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी -अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् -

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ -माखन लाल चतुर्वेदी

तृष्णा ही सब दुःखों का मूल है -महात्मा बुद्ध

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः -आचार्य मनु (मनुस्मृति)

अश्वत्थामा हतो नरो वा कुञ्जरो वा -धर्मराज युधिष्ठिर

खूब लडी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी -सुभद्रा कुमारी चौहान

नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी। -मैथिली शरण गुप्त

विश्वमस्तिष्क भारतीय ग्रन्थ गौरव

वेद-

वेद चार हैं। वेदों को विश्व का सर्व प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। वेद को अपौरुषेय माना जाता है। कृष्णद्वैपायन महर्षि वेदव्यास जी ने विषय प्रतिपादन के अनुसार वेद को चार भागों में विभाजित किया।

वेद के चार भाग -	**संहिता**	**ब्राह्मण**	**आरयण्क**	**उपनिषद्**
चार वेद (वेद चतुष्टय) -	**ऋग्वेद**	**यजुर्वेद**	**सामवेद**	**अथर्ववेद**
चार उपवेद-	**आयुर्वेद**	**धनुर्वेद**	**गान्धर्ववेद**	**स्थापत्यवेद**
चार ऋत्विज्-	**होता**	**अध्वर्यु**	**उदगाता**	**ब्रह्मा**
चारों वेदों के देवता-	**अग्नि**	**वायु**	**सूर्य**	**सोम**
,, ,, ऋषि-	**पैल**	**वैशम्पायन**	**जैमिनि**	**अथर्वा, सुमन्तु**
,, उपनिषद्-	**ऐतरेय**	**ईश, कठ, बृहदारण्यक**	**प्रश्न, मुण्डक ---**	**छान्दोग्य, केन, माण्डूक्य**
,, ब्राह्मण ग्रन्थ-	**ऐतरेय**	**शतपथ ब्राह्मण**	**पञ्चविंश, षड्विंश**	**गोपथ**
,, श्रौतसूत्र ग्रन्थ-	**आश्वलायन**	**कात्यायन**	**षड्विंश, सामब्राह्मण**	**शौनकीय**
,, गृह्यसूत्र ग्रन्थ-	**आश्वलायन**	**पारस्कर**	**गोभिल**	**शौनकीय**

सामान्य परिचय-

वेद- विद् ज्ञाने धातु से वेद शब्द बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञानराशि'।

मन्त्र- चिन्तन-मनन पूर्वक देवताओं की स्तुति को मन्त्र कहते हैं।

ब्राह्मण- कामना परक विविध कार्यों की सिद्धि के वैदिक उपायों का वर्णन।

उपनिषद्- अध्यात्म विषयक ज्ञान का महत्त्वपूर्ण चिन्तन।

ऋत्विज्- यज्ञकर्त्ता,

होता- जो यज्ञ में देवप्रशंसा परक मन्त्रों द्वारा देवताओं का आवाहन करता है।

अध्वर्यु- जो यज्ञविषयक सम्पूर्ण कर्म को विधिपूर्वक सम्पन्न कराता है।

उद्गाता- जों वेद मन्त्रों का सस्वर गान करता है। **ब्रह्मा-** यज्ञ कर्म का शास्त्रीय निरीक्षणकर्त्ता। भारतीय-सभ्यता के अनुसार मानव-जीवन व्यवस्था-

मातृ-पितृ चरणकमलेभ्यो नमः

महापुरुषः	माता/पिता	महापुरुषः	माता/पिता
आद्यशंकराचार्यः	आर्यम्बा/शिवगुरुः	वेदव्यासः	सत्यवती/महर्षिः पराशरः
महर्षिः दुर्वाषा	अनसूया/अत्रिः	भीष्मः	गंगा/शान्तनुः
स्वामी विवेकानन्दः	भुवनेश्वरी/विश्वनाथदत्तः	अभिमन्युः	सुभद्रा/अर्जुनः
लव-कुशौ	सीता/रामः	कृष्णः	देवकी/वसुदेवः
द्रोणाचार्यः	घृताची/भरद्वाजः	प्रह्लादः	कयाधु/हिरण्यकश्यपुः
रामकृष्णपरमहंसः	चन्द्रादेवी/खुदिराम चटर्जी	ध्रुवः	सुनीतिः/उत्तानपादः
लक्ष्मीबाई	भागीरथीबाई/मोरो पन्तः	परशुरामः	रेणुका/जमदग्निः
क्षत्रपति शिवाजी	जीजाबाई/सम्भाजी	महात्माबुद्धः	मायादेवी/शुद्वोधन

धर्मानुगो गच्छति जीव एकः (पन्थ-धर्मग्रन्थाश्च)

स्थलम्	धर्मः	धर्मग्रन्थः	प्रणेताः
मंदिरम्	हिन्दु (सनातन)	श्रीमद्भगवद्गीता	भगवान् श्रीकृष्णः
गुरुद्वारम्	सिख-धर्मः	श्री गुरुग्रन्थसाहबः	श्री गुरुनानकः
बौद्धमंदिर	बौद्ध-धर्मः	त्रिपिटकः	महात्मा बुद्धः
यज्ञशाला	आर्य-समाजः	सत्यार्थप्रकाशः	स्वामी दयानन्द सरस्वती
मंदिरम्	जैन-धर्मः	जैनागमः (जिनवाणी)	स्वामी महावीरः
मस्जिद्	इस्लामः	कुराणः	हजरत मो. साहबः
चर्च	ईसाई	बाइबिल	ईसा (क्राइस्ट)

सुभाषितामृतम्

अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलम् अनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकः तत्र दुर्लभः ॥

कोई भी अक्षर ऐसा नहीं होता है जिससे मन्त्र नहीं बन सकता। ऐसी कोई वनस्पति नहीं जिसकी औषधि नहीं बन सकती। प्रत्येक व्यक्ति का उपयोग किया जा सकता है। केवल योजक की आवश्यकता है। कोई भी वस्तु निरुपयोगी नहीं है। उसके उपयोग करने की क्षमता वाले व्यक्ति की आवश्यकता है।

वरम् एको गुणी पुत्रो न च मूर्ख - शतान्यपि।
एकः चन्द्रः तमो हन्ति न च तारा गणोऽपि च ॥

सौ मूर्ख पुत्रो से एक गुणवान पुत्र अच्छा है। जैसे सौ तारागण अन्धकार को दूर नहीं करते, इस अन्धकार को एक चन्द्रमा ही दूर कर देता है।

प्रमुख-नद्यः

नदी	उद्गमः	प्रमुखं प्रवाह क्षेत्रम्	सहायक नद्यः
सिन्धुः	तिब्बते मानसरोवरं निकषा	लद्दाखः, बलूचिस्तानः जम्मू-कश्मीरः पाकिस्तानः	सतलज, व्यास रावी, चिनाव झेलम आदि
सतलजः	मानसरोवर प्रपातः (राक्षसतालः)	तिब्बत, कुल्लू शिवालिंक, पंजाब	सिप्ती वासपा
झेलम-	कश्मीरे शेषनाग-प्रपातः	जम्मू-कश्मीरे बुलर प्रपातः	किशनगंगा
व्यासः	रोहतांग दर्रा समीपे	शिवालिंक पंजाब	पार्वती, सैन्ज तीर्थन
गंगा	केदारनाथ-शिखरे गोमुखम्	उत्तराखण्ड, उ.प्र. बिहार, पं.बंगाल बंग्लादेश	अलकनन्दा, यमुना भागीरथी, रामगंगा गोमती, घाघरा गण्डक, कोसी टौंस, बागमती
यमुना	यमुनोत्री उत्तराखण्डः	उत्तराखण्ड उ.प्र.	गिरि, आलम चम्बल, बेतवा, केन
गोमती	पीलीभीतः	उत्तराखण्ड उ.प्र.	सई, वर्ना आदि
घाघरा (सरयू)	तिब्बते मानसरोवर-राक्षसतालः	नेपालः, उ.प्र.	राप्ती, शारदा छोटी गण्डक
चम्बल-	मध्यप्रदेशे-मऊ समीपम्	मध्यप्रदेशः, उज्जैनः राजस्थानः	काली सिन्ध, बनारस क्षिप्ता, दूद्धी
ब्रह्मपुत्रः	मानसरोवर-समीपं	लद्दाखः, असम, अरुणांचल प्रदेशः	डिवोंम, डिहांग, धनसीरी, मानस
गोदावरी	नासिक-महाराष्ट्रम्	महाराष्ट्रम्, आन्ध्र-प्रदेशः	पेनगंगा, वेनगंगा वर्धा
महानदी	मध्य-प्रदेशः	मध्यप्रदेशः, छत्तीसगढ़ः झारखण्डः, उड़ीसा, महा.	

तेषाम् विवरणम् च

अन्तमेलनम्	तटे स्थितानि नगराणि	तटबन्धः
कराची, अरबसागरः	हैदराबाद	--
कपूरथलां निकषा	लुधियाना फिरोजपुरम्	भाखड़ा नांगलः
चिनाव नद्याम्	श्रीनगरम्	--
हरी पार्श्वे सतलजः	मण्डी	हरिः
बंगाल की खाड़ी इति सागरे	हरिद्वार, कानपुरम् इलाहाबादः, वाराणसी पटना, भागलपुरम् कोलकाता	फरक्का टिहरी
इलाहाबादे गंगायाम्	दिल्ली, मथुरा आगरा, हमीरपुरम् इलाहाबादः	--
गाजीपुरे गंगायाम्	लखनऊ जौनपुरम्	--
छपरा गंगा नद्याम्	अयोध्या	घाघरा
इटावा-यमुनायाम्	--	गाँधी सागरः राणाप्रताप-सागरः जवाहर-सागरः (राजस्थानम्)
गंगा-नद्याम्	गुवाहाटी डिबरूगढ़ः	--
माचिलीपत्तने (बंगाल की खाड़ी)	नासिक-भद्राचलम्	--
कटके	काकेट, संभलपुरम् कटकः	हीराकुण्डः

वन्देभारतमातरम्

भारतस्य राजधानी	- नव देहली
भारतस्य क्षेत्रफलम्	- 32,87263 वर्ग किमी.
भारतस्य जनसंख्या	- 1,210,193,422 (एक सौ इक्कीस करोड़)
भारतस्य राष्ट्रीय भाषा	- हिन्दी
भारतस्य सांस्कृतिक-भाषा	- संस्कृतम्
संविधान द्वारा स्वीकृत-भाषाः	- 22 (द्वाविंशतिः)
भारतस्य राज्यानि-	- 28 (अष्टाविंशतिः)
केन्द्र शासित राज्यानि-	- 7 (सप्तः)
विशेषाधिकार प्राप्तानि राज्यानि	- 11 (एकादश)
भारते व्यवहृताः मातृभाषाः	- 1652 (द्वि पञ्चाशत् अधिक षोडश शतम्)
क्षेत्रफलत् दृष्ट्या वृहत्तरम् राज्यम्	- राजस्थानम्
जनसंख्या दृष्ट्या वृहत्तरम् राज्यम्	- उत्तर-प्रदेशः
भारतीय ध्वज परिमाणम् लम्बा. चौ.	- 3:2
राष्ट्रीय ध्वजस्य संविधानद्वारा स्वीकृति	- 22 जुलाई 1947 ई.
संविधान द्वारा ध्वजस्य लोकार्पणम्	- 14 अगस्त 1947 ई.
भारतस्य राष्ट्रीयं गानम्	- जनगणमन अधिनायक जय हे (गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोरः)
राष्ट्रीय-गानस्य स्वीकृतः समयः	- 52 पलम् (सेकेण्ड)
राष्ट्रीय-गानस्य स्वीकृतिः	- 24 जनवरी 1950 ई.
राष्ट्रीयं वाक्यम्	- सत्यमेव जयते (मुण्डकोपनिषद्)

भारते परमाणु ऊर्जायाः उत्पादनकेन्द्रम्

स्थानम्	प्रदेशः	स्थानम्	प्रदेशः
1. तारापुरम्	- महाराष्ट्रम्	2. रावतभाटा	- राजस्थानम्
3. कलपक्कमः	- तमिलनाडु	4. नरौरा	- उत्तरप्रदेशः
5. काकरापारम्	- गुर्जरप्रान्तः	6. कैगा	- कर्णाटकः

संङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानानाम् उपासते ॥

पग से पग (कदम से कदम) मिलाकर चलो स्वर में स्वर मिलाकर बोलो, तुम्हारे मनों में समान बोध हो। पूर्वकाल में जैसे देवी ने अपना भाग प्राप्त किया, सम्मिलित बुद्धि से कार्य करने वाले उसी प्रकार अपना-अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।

- शुभमस्तु -

भारतीयवैभवज्ञान-परीक्षा-प्रश्नोत्तरी - 2010

वरिष्ठ-वर्गः (कक्षा- 9, 10, 11, 12)

1. आयुर्वेद-शास्त्रस्य प्रवर्तकः कः आसीत् ?
   (क) पाणिनिः ○ (ख) धन्वन्तरिः ○ (ग) कपिलः ○ (घ) कणादः ○
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् किम् अस्ति?
   (क) महाकाव्यम् ○ (ख) नाटकम् ○ (ग) दूतकाव्यम् ○ (घ) किमपि न ○
3. भारतस्य प्राचीना मूललिपिः का ?
   (क) गूढलिपिः ○ (ख) भित्तिलिपिः ○ (ग) चित्रलिपिः ○ (घ) ब्राह्मीलिपिः ○
4. स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमः शिक्षामंत्री कः आसीत्?
   (क) अबुल क. आजादः ○ (ख) एस. राधाकृष्णन् ○
   (ग) अब्दुल्ला खानः ○ (घ) जवाहरलाल नेहरू ○
5. पृथ्वी वर्तुला अस्ति, इति कः उक्तवान्?
   (क) भाष्कराचार्यः ○ (ख) बाणभट्टः ○ (ग) आर्यभट्टः ○ (घ) ब्रह्मगुप्तः ○
6. शकुन्तलायाः पिता कः आसीत् ?
   (क) कण्वः ○ (ख) दुर्वासा ○ (ग) विश्वामित्रः ○ (घ) दुष्यन्तः ○
7. भारतीय-आर्याणां भाषा का?
   (क) संस्कृतम् ○ (ख) उर्दू ○ (ग) फारसी ○ (घ) ईरानी ○
8. वैज्ञानिक परिपाट्या 'सूर्यः' किम् अस्ति?
   (क) ग्रहः ○ (ख) उपग्रहः ○ (ग) परमाणुः ○ (घ) कौमुदीः ○
9. 'सत्यमेव जयते' कस्मात् ग्रन्थात् गृहीतः?
   (क) ईशावास्योपनिषदः ○ (ख) केनोपनिषदः ○
   (ग) माण्डूक्योपनिषदः ○ (घ) मुण्डकोपनिषदः ○
10. ब्रह्मसूत्रम् , गीता, उपनिषद एतेषां समूहः किम् कथ्यते?
    (क) शक्तित्रयी ○ (ख) प्रस्थानत्रयी ○ (ग) बृहत्त्रयी ○ (घ) लघुत्रयी ○
11. कस्य प्रान्तस्य प्रसिद्धि 'समुद्रपुत्र' नाम्ना अस्ति?
    (क) कश्मीरस्य ○ (ख) उत्कलस्य ○ (ग) लक्षद्वीपस्य ○ (घ) महाराष्ट्रस्य ○
12. गुप्तवंशे कस्य शासनकालः स्वर्णयुगम् कथ्यते?
    (क) श्रीगुप्तस्य ○ (ख) स्कन्दगुप्तस्य ○ (ग) चन्द्रगुप्तस्य ○ (घ) समुद्रगुप्तस्य ○
13. स्वेच्छया कमपि एकं श्लोकं लिखन्तु? ....
14. राजन् शब्दस्य द्वितीया, तृतीया विभक्तेः सर्वाणि रूपाणि लिखन्तु।....
15. षड् ऋतूनां नामानि लिखन्तु।......

स्नातकवर्गः कक्षा- शास्त्री, बी.ए., .बी.एस.सी.

1. वाराणस्यां प्रथमसंस्कृतविद्यालयस्य स्थापनां कः कृतवान् ? जोनयन डंकन
2. 'त्रिपिटिक' केन धर्मेण सम्बन्धः अस्ति? बौद्धधर्मेण
3. 'गच्छति' क्रियापदस्य प्रकृतिप्रत्ययं लिखतु- गम्+लट् + तिप् (लट् लकार प्रथम पुरुष- एकवचनम्)
4. 'पादेन खञ्जः' केन सूत्रेण तृतीया विभक्तिः अस्ति? येनाङ्ग विकारः (अक्ष्णा काणः)
5. स्वतन्त्रभारतस्य राष्ट्रिय आदर्शवाक्यं किमस्ति? सत्यमेव जयते
6. 'वेदत्रयी' मध्ये कः वेदः न परिगण्यते? अथर्ववेदः
7. संस्कृते कति कारकाणि सन्ति? षट् (सम्बन्ध-कारकं नास्ति)
8. 'उत्तररामचरितम् ' नाटकस्य लेखकः कः अस्ति? आचार्यभवभूतिः
9. कर्मेन्द्रियाणि कति सन्ति? पञ्च
10. 24 संख्या संस्कृते किं लिख्यते?. चतुर्विंशतिः
11. लघुसिद्धान्तकौमुद्याः लेखकः कः अस्ति? आचार्यवरदराजः
12 यष्टिक्रीडा (हॉकी) कति क्रीडकाः क्रीडन्ति? एकादश
13. हरिशब्दस्य प्रथमाविभक्ति बहुवचने किं रूपं भवति? हरयः
14. सम्प्रति केन्द्रीय शिक्षामन्त्री कः अस्ति? डॉ. प्रकाशजावडेकरः
15. भारतस्य प्राचीना मूललिपिः का अस्ति? ब्राह्मी
16. किं वेदाङ्गं वेदपुरुषस्य मुखम् उच्यते? व्याकरणम्
17 सिन्धुनद्याः प्रमुखं प्रवाह क्षेत्रं किमस्ति? जम्मूकश्मीरः (लद्दाख)
18. 'पदलालित्यम्' कस्य प्रसिद्धम् अस्ति? आचार्यदण्डिनः
19. कति आस्तिकदर्शनानि सन्ति? षट्
20. 'गङ्गोदकम्' अत्र केन सूत्रेण सन्धिः अस्ति? आद्गुणः
21 कतिपुराणानि सन्ति? अष्टादश
22 गर्भाधानाद् मृत्युपर्यन्तं कति संस्काराःविहिताः सन्ति? षोडश
23. 'बोधिवृक्षः' यत्र भगवान बुद्धः ज्ञानं प्राप्तवान् कुत्र अस्ति? गया
24. चतुर्षु पुरुषार्थेषु अन्तिमः पुरुषार्थः कः अस्ति? मोक्षः
25. सांख्य-दर्शनस्य प्रणेता कः आसीत् ? कपिलमुनिः
26. चित्तवृत्ति निरोधाय किम् आवश्यकम् अस्ति? योगः (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः-पातञ्जलयोगसूत्रम्)
27. गंगा अवतरणदिवसः केन रूपेण मान्यते? गङ्गादशहरा
28. 'पठितुम् ' अत्र कः प्रत्ययः अस्ति? तुमुन्
29. 'युवा दिवसः' कदा आचर्य्यते? 12 जनवरी
30. वैदिकसंकृतेः संविधानग्रन्थः कथ्यते? मनुस्मृतिः
31. विक्रमसंवत् संस्थापकः कः आसीत् ? विक्रमादित्यः
32. महाभारततस्य अपरं नाम किम् ? जयसंहिता
33. सर्वोच्च न्यायालयस्य आदर्शवाक्यं किमस्ति? यतो धर्मः ततो जयः
34. गद्य-पद्यात्मकः वेदः अस्ति? यजुर्वेदः
35. पुराणे चिरजीविनः के सन्ति? सप्त (अश्वत्थामा, बलिः, व्यासः हनुमान् , विभीषणः, कृपः, परशुरामः)
36. भारतस्य उपराष्ट्रपतिः कः अस्ति? एम. वेंकैय्यानायडू
37. उत्तरप्रदेश संस्कृतसंस्थानस्य सर्वोच्च पुरस्कारः कः? विश्वभारती
38. 'दा' धातोः लट् लकारस्य रूपाणि लिखन्तु?
39. 'रामायणं महाकाव्यम् ' दशवाक्यानि लिखन्तु?
40. 'समृद्धराष्ट्रनिर्माणे संस्कृतम्' विषये दशवाक्यानि लिखन्तु?

गंगा हरीतिमा योजना को समर्पित

भारतीय वैभव ज्ञान परीक्षा-20[illegible]-[illegible]